दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

MPHIN/2021/83938

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 308 | ग्वालियर बुधवार, 30 अगस्त 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

हाई कोर्ट से रिहाई के तुरंत बाद इमरान खान गिरफ्तार

नई दिल्ली। तोशाखाना मामले में पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को इस्लामाबाद हाईकोर्ट से राहत मिलने के तुरंत बाद उन्हें एफआईए ने दूसरे मामले में गिरफ्तार कर लिया. सिफर मामले में हुई गिरफ्तारी के बाद जांच एजेंसी ने उन्हें बुधवार को कोर्ट में पेश करेगी. इससे पहले इस्लामाबाद हाई कोर्ट ने निचली अदालत का फैसला पलटते हुए इमरान खान को राहत देने का आदेश दिया था, लेकिन हाई कोर्ट से राहत मिलने के तुरंत बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है. बता दें कि इमरान खान पर तोशाखाना मामले के अलावा कई अन्य मामले भी दर्ज हैं. जांच एजेंसियां अलग-अलग मामलों की जांच कर रही है. 29 अगस्त को इस्लामाबाद हाई कोर्ट से जैसे ही उन्हें राहत मिली की. सिफर मामले में जांच एजेंसी ने उन्हें तत्काल गिरफ्तार कर लिया. जानकारी के मुताबिक, तोशाखाना मामले में राहत उन्हें अनवर उल हक के कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनने से मिली है. दरअसल, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने 9 अगस्त को अपने पद से इस्तीफा दिया था और उनकी जगह अनवर उल हक को केयरटेकर प्रधानमंत्री बनाया गया है. बलूचिस्तान अवामी पार्टी से जुड़े सीनेटर अनवर उल हक इस साल के अंत में नए चुनाव तक कार्यवाहक सरकार का नेतृत्व करेंगे. हाई कोर्ट से रिहाई के तुरंत बाद इमरान खान गिरफ्तार, इस मामले में हुई गिरफ्तारी यह खबर अभी ब्रेकिंग न्यूज है. इसके अपडेट आ रहे हैं. जैसे-जैसे अपडेट आते जाएंगे हम आप तक पहुंचाएंगे.

2014 के भड़काऊ भाषण मामले में केजरीवाल की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई टाली

नई दिल्ली। 2014 के भड़काऊ भाषण मामले में अरविंद केजरीवाल के खिलाफ शुरू की गई आपराधिक कार्रवाई को चुनौती देने वाली याचिका पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई स्थगित कर दी। न्यायमूर्ति एमएम. सुंदरेश और जेबी. पारदीवाला की पीठ ने मामले में जवाबी हलफनामा दाखिल करने के लिए चार सप्ताह की अवधि की अनुमति दी है। इससे पहले शीर्ष अदालत ने केजरीवाल के खिलाफ उनकी विवादास्पद टिप्पणी के लिए आपराधिक कार्रवाई पर रोक लगा दी थी। केजरीवाल ने 2014 के लोकसभा चुनावों के दौरान कहा था कि जो भाजपा को वोट देगा, उसे खुदा भी माफ नहीं करेगा। सुप्रीम कोर्ट ने मौखिक तौर पर टिप्पणी की थी कि धर्म के आधार पर वोट की अपील नहीं की जा सकती। केजरीवाल द्वारा दायर विशेष अनुमति याचिका पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने विचार करने से इनकार कर दिया था।उच्च न्यायालय ने सुल्तानपुर सत्र न्यायालय के एक आदेश को बरकरार रखा था। अपनी याचिका में केजरीवाल ने दलील दी थी कि खुदा को केवल मुसलमानों के भगवान के रूप में नहीं माना जा सकता है। एक फ्लाइंग स्क्वाड मजिस्ट्रेट ने जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 125 (चुनाव के संबंध में वर्गों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देना) का हवाला देते हुए आरोप लगाया था कि अरविंद केजरीवाल ने आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किया है।

कल आसमान में दिखेगा अद्भुत नाजारा अलग रंग और आकार में नजर आएगा चांद

नई दिल्ली। चंद्रयान-3 का प्रज्ञान रोवर इनदिनों चांद की सतह पर घूम रहा है और इसरो को डेटा भेज रहा है. इसी बीच आपके लिए चंद्रमा से जुड़ी एक और खबर आई है. जो चांद का दीदार करने वालों के लिए बेहद जरूरी है. दरअसल, कल यानी 30 अगस्त को आसमान में ब्लू सुपरमून दिखाई देगा. जो इस साल अब तक दिखने वाला सबसे बड़ा चांद होगा. इस दौरान चंद्रमा का आकार हर दिन की तुलना में 7 फीसदी अधिक होगा. साथ ही ये आमदिनों की तुलना में 16 प्रतिशत अधिक चमकीला नजर आएगा. बता दें कि इस तरह का नजारा यानी ब्लू सुपरमून हर महीने या फिर हर साल दिखाई नहीं देता. ये हर 2 या 3 साल में दिखाई देता है. अगर आपने कल का मौका गंवा दिया तो आपको लंबा इंतजार करना पड़ेगा. क्योंकि इसके बाद ब्लू सुपरमून 2026 में देखने को मिलेगा. इससे पहले 2018 में हुए ब्लू सुपरमून का नाजारा दुनियाभर में देखने को मिला था. तब चंद्रमा पृथ्वी से 3,57,530 किमी की दूरी पर आ गया था. जबकि 30 अगस्त को चंद्रमा और पृथ्वी दूरी 3,57,344 किमी हो गई थी. बता दें कि कल दिखने वाला चंद्रमा आपको नीले रंग का नहीं बल्कि नारंगी रंग का दिखाई देगा. दरअसल, चंद्रमा का आकार और इसका रंग अंतरिक्ष में होने वाली खगोलीय घटनाओं के चलते बदलता रहता है.

क्या रूस के साथ खटाई में पड़ रहे हमारे रिश्ते

नई दिल्ली। भारत में अगले महीने के पहले हफ्ते में जी-20 सम्मेलन होने जा रहा है. 8 और 10 सितंबर को राजधानी नई दिल्ली आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में दुनिया के कई शक्तिशाली राष्ट्र और ताकतवर नेता हिस्सा ले रहे हैं. यूएस प्रेजिडेंट जो बाइडेन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन लेकर कनाड़ा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो जैसे पावरफुल नेताओं ने जी20 सम्मेलन में आने की हामी भर दी है, लेकिन रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारत आने से इनकार कर दिया है. रूस भारत का पुराना और भरोसेमंद दोस्त है. ऐसे में पुतिन का भारत आने से इनकार करना कई मायनों में चौंकाता है. यह खबर सुनकर आप सोच रहे होंगे कि आखिर पुतिन के भारत न आने की वजह क्या है तो आज हम आपको जी20 सम्मेलन में

हिस्सा लेने से पुतिन के इनकार की असली वजह बताते हैं. दरअसल, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन कर जी20 सम्मेलन में हिस्सा न लेने की बात कही है. इस दौरान पुतिन ने कहा कि नई दिल्ली में 9 और 10 सितंबर को होने जा रहे जी20 सम्मेलन में उनकी जगह रूस की तरफ से विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव प्रतिनिधित्व करेंगे. प्रधानमंत्री कार्यालय की तरफ से बताया गया कि टेलिफोन पर दोनों नेताओं के बीच द्विपक्षीय संबंधों, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी बातचीत हुई. जी20 विश्व की 20 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नर्स का एक संगठन है, जिसमें 19 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं. जी-20 ग्रुप सी स्थापना 1999 में की गई थी. उस समय इस ग्रुप में एरजेंटिना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाड़ा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, साउथ अफ्रीका, तुर्की, यूके, यूएस और ईयू शामिल थे.

> प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो जैसे पावरफुल नेताओं ने जी20 सम्मेलन में आने की हामी भर दी है, लेकिन रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारत आने से इनकार कर दिया है. रूस भारत का पुराना और भरोसेमंद दोस्त है. ऐसे में पुतिन का भारत आने से इनकार करना कई मायनों में चौंकाता है. यह खबर सुनकर आप सोच रहे होंगे कि आखिर पुतिन के भारत न आने की वजह क्या है तो आज हम आपको जी20 सम्मेलन में हिस्सा लेने से पुतिन के इनकार की असली वजह बताते हैं.

प्रयागराज छात्र मर्डरः मैं चिल्लाती रही, कोई बचाने नहीं आया

भाई तड़पकर मर गया, अब किसको राखी बांधेगी बहन

प्रयागराजः उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में दसवीं के छात्र की मॉब लिंचिंग का मामला सामने आया है। स्कूल में बहन की छेड़खानी का विरोध करने पर झुंड में आए बदमाशों ने सड़क पर छात्र को घेरा। उस पर पटरे से हमला कर लिया। इस हमले के बाद छात्र सड़क पर गिर गया। बदमाश उस पर लगातार हमला करते रहे। छात्र के साथ मौजूद उसकी चचेरी बहन मदद के लिए लोगों को पुकारती रही। हाथ जोड़कर लोगों से अनुरोध करती रही कि उसके भाई को बचा लें। लेकिन, किसी ने भी भाई-बहन की मदद नहीं की। सड़क पर 16 वर्षीय दसवीं के छात्र को हमलावर तब तक पीटते रहे, जब तक वह अधमरा नहीं हो गया। उसके बदन से खून निकल रहा था। अचेत अवस्था में था। लड़की अपने परिजनों को जानकारी दे रही थी। लोगों से भाई को अस्पताल पहुंचाने का अनुरोध कर रही थी, किसी ने उसकी पुकार नहीं सुनी। लड़की ने जब उस दृश्य को याद किया तो उसकी आंखों से आंसू और आक्रोश दोनों बह रहे थे। रक्षाबंधन से पहले भाई का जाना बहन के लिए दिल तोड़ने वाला है। अब वह किसको राखी बांधेगीड़ यह सवाल हर कोई कर रहा है। मृतक छात्र की बहन ने भाई के साथ मारपीट की घटना के बारे में बताया। उसने कहा कि सोमवार को दोपहर बाद स्कूल बंद होने पर हम दोनों घर जा रहे थे। हमलोग जैसे ही तुर्कपुरवा मोहल्ले में पहुंचे थे कि हमारे स्कूल में पड़ने वाले इस गांव के छात्रों ने हमारा हाथ पकड़ लिया। हमें खींचने की कोशिश की गई। मैं चिल्ला रही थी। इसी दौरान हमारा भाई उन मनचलों

से भिड़ गया। इसके बाद उन लोगों ने हमारे भाई पर हमला कर दिया। वे पटरे से मारते रहे। उसके सिर पर पटरा मारा। इसके बाद वह जमीन पर गिर पड़ा। उसके पूरे बदन से खून निकल रहा था। लड़की ने कहा कि मैं चिल्लाती रही, कोई मदद करने नहीं आया। मेरे भाई को अधमरा छोड़कर हमें धमकी देते हुए वे लोग वहां से चले गए।

सूचना पर पहुंचे पहुंचे परिजन

छात्रा ने कहा कि मेरा भाई सड़क पर पड़ा तड़प रहा था। मैं असहाय खड़ी उसे देख रही थी। लोगों से मदद मांगती रही, लेकिन कोई मदद करने नहीं आया। परिजनों को सूचना मिली तो वे लोग वहां आए। भाई को लेकर वे लोग प्रयागराज के स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल पहुंचे। डॉक्टरों ने उसे वहां मृत घोषित कर दिया। सिर पर हमले के कारण मौके पर ही छात्र की मौत हो गई थी। छात्रा की आंखों से आंसू सूख नहीं रहे हैं। भाई को अपने सामने मरता देखकर उसके दुख और आक्रोश का ठिकाना नहीं है। छात्र परमानंद इंटर कॉलेज में पढ़ाई करता था। छात्र की मौत के बाद लोगों ने खीरी मोड़ को करीब 9 घंटे तक जाम रखा। कमिश्नर और डीएम के कार्रवाई के आश्वासन के बाद लोगों ने 9 घंटे के बाद जाम को तोड़ा। मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस की तैनाती कर दी गई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। अब तक तीन आरोपियों की गिरफ्तारी हुई है।

भारत और इटली में बढ़ रहा है सामरिक, आर्थिक और सैन्य सहयोग

नई दिल्ली। भारत आज दुनिया में एक निर्णायक भूमिका निभाना चाहता है. इसके साथ हर देश अपने संबंधों को नई ऊंचाई पर ले जाना चाहता है. प्रधानमंत्री मोदी अभी ब्रिक्स समिट में हिस्सा लेने जोहानिसबर्ग गए थे और लगे हाथों उन्होंने ग्रीस की भी यात्रा की थी. उसके पहले वह अमेरिका की बेहद सफल यात्रा करके आए थे, जहां जी-7 देशों की मीटिंग भी हुई थी. दुनिया के विस्ति देशों में से एक इटली के साथ भी भारत के संबंध अच्छे होने लगे हैं. ऑगस्टा वेस्टलैंड में जिस तरह का विवाद और पैसों के लेनदेन के आरोप लगे थे, दोनों देश अब उस दौर से उबर चुके हैं और रक्षा व सुरक्षा क्षेत्र में पड़ी झांई को हटाने के लिए सहमत हो गए हैं.

लोकसभा चुनाव से पहले लोगों को बड़ी राहत, घरेलू गैस सिलेंडर 200 रुपये सस्ता

नई दिल्ली। इसी साल के अंत तक पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव और अगले साल लोकसभा चुनाव से पहले मोदी सरकार महंगाई से राहत देने की तैयारी में जुटी हुई है. सरकार ने महंगाई रोकने के लिए बड़ा कदम उठाते हुए गैस सिलेंडर की कीमतों में कटौती करने का फैसला लिया है. गैस सिलेंडर के दाम 200 रुपये तक कम हो सकते हैं. हालांकि ये फायदा केवल प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के लाभार्थियों को मिलेगा. बिना सब्सिडी वाले गैस सिलेंडरों पर कोई छूट नहीं होगी. कैबिनेट ने उज्जवला योजना के तहत गैस सिलेंडर पर 200 रुपये तक सब्सिडी देने की मंजूरी दे दी है. लोकसभा चुनाव से पहले लोगों को बड़ी राहत, घरेलू सिलेंडर 200 रुपये होगा सस्ता यह खबर अभी ब्रेकिंग न्यूज है. इसके अपडेट आ रहे हैं. जैसे-जैसे अपडेट आते जाएंगे हम आप तक पहुंचाएंगे.

जब चांद पर पहुंचीं इंदिरा गांधी, फिर फिसली ममता बनर्जी की जुबान

नई दिल्ली। स्पेस ज्ञान को लेकर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री एक बार फिर निशाने पर आ गई हैं. दरअसल अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (एआईटीसी) की छात्र शाखा तृणमूल छात्र परिषद (टीएमसीपी) की स्थापना दिवस की सालगिरह के अवसर पर ममता बनर्जी एक रैली को संबोधित कर रही थीं. इस दौरान उन्होंने कहा, 'जब इंदिरा गांधी चंद्रमा पर पहुंचीं तो उन्होंने राकेश (शर्मा) से पूछा कि वहां से हिंदुस्तान कैसा दिखता है. उन्होंने जवाब दिया सारे जहां से अच्छा%. पिछले हफ्ते भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को उसके महत्वाकांक्षी चंद्रयान -3 मिशन की सफलता पर बधाई देते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा था कि इंदिरा गांधी ने 'राकेश रोशन' से पूछा था कि 'चंद्रमा' से धरती कैसा दिखता है. इससे पहले भी

चंद्रयान 3 को लेकर नेताओं ने गलतियां की हैं. पिछले हफ्ते बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से चंद्रयान 3 के बारे में बोलने को कहा गया तो वे इसके बारे में अनजान थे. इसके अलावा ओमप्रकाश राजभर, राजस्थान के खेल मंत्री अशोक चांदना ने भी ऐसे बयान दिए, जिसकी चर्चा सोशल मीडिया पर खूब हुई. एक न्यूज चैनल से बात करते हुए ओमप्रकाश राजभर ने कहा, हम तो भारत के उन वैज्ञानिकों को धन्यवाद देते हैं जो दिन प्रतिदिन रिसर्च करके नई खोज कर रहे हैं. जो चंद्रयान 3 की बात कर रहे हैं, इसके लिए हम उनको बधाई देते हैं. कल धरती पर सकुशल उसके आने का जो टाइम है, आने के बाद उसका स्वागत पूरे देश को करना चाहिए. इस बयान को लेकर सोशल मीडिया पर उनके खिलाफ खूब तंज किया जा रहा है.

सेल्फ रिस्पेक्ट मैरिज के लिए सार्वजनिक घोषणा की जरूरत नहीं

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण आदेश में सोमवार (29 अगस्त) को कहा कि तमिलनाडु में संशोधित हिंदू विवाह कानून के तहत वकील परस्पर सहमति से दो वयस्कों के बीच सुयमरियाथाई (आत्मसम्मान) विवाह संपन्न करा सकते हैं. तमिलनाडु सरकार ने 1968 में, सुयमरियाथाई विवाह को वैध बनाने के लिए कानून के प्रावधानों में संशोधन किया था. इसका मकसद विवाह प्रक्रिया को सरल बनाते हुए ब्राह्मण पुजारियों, पवित्र अग्नि और सप्तपदी (सात चरण) की अनिवार्यता को खत्म करना था. यह संशोधन विवाह कराने के लिए ऊंची जाति के पुजारियों और विस्तृत रीति-रिवाजों की आवश्यकता को दूर करने के लिए किया गया था. हालांकि, इन विवाहों को भी कानून के अनुसार पंजीकरण कराने की आवश्यकता थी. सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को मद्रास हाईकोर्ट के एक फैसले को रद्द करते हुए यह आदेश दिया.

गीतिका श्रीवास्तव पाकिस्तान में भारतीय उच्चायोग में होंगी नई प्रभारी

विदेश मंत्रालय के मुख्यालय में संयुक्त सचिव के रूप में कार्यरत गीतिका श्रीवास्तव पाकिस्तान के इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायोग में भारत की नई प्रभारी होंगी. न्यूज एजेंसी पीटीआई ने सोमवार (28 अगस्त) को इस संबंध में जानकारी रखने वालों के हवाले से यह रिपोर्ट प्रकाशित की. गीतिका श्रीवास्तव भारतीय विदेश सेवा की वर्ष 2005 बैच की अधिकारी हैं. वह वर्तमान में विदेश मंत्रालय के हिंद-प्रशांत प्रभाग में संयुक्त सचिव के रूप में कार्यरत हैं, जो आसियान, आईओआरए और अन्य के साथ भारत की बहुपक्षीय कूटनीति की देखभाल करता है.

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने ट्वीट कर दी ओणम की शुभकामनाएं

नई दिल्ली। दक्षिण भारत के प्रमुख त्योहार ओणम का मंगलवार (29 अगस्त 2023) को आखिरी दिन है. इस पवित्र त्योहार के मौके पर देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को ट्वीट कर बधाई दी है. पीएम मोदी ने कहा है कि बीते कुछ सालों में भारत के इस त्यौहार को वैश्विक पहचान मिली है. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपने एक ट्वीट में कहा, मैं केरल के अपने सभी भाईयों और बहनों को ओणम की शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं. यह पवित्र त्योहार प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रेषित करने का त्योहार है. मैं प्रार्थना करती हूं कि यह त्योहार लोगों के बीच सद्भाव और समृद्धि लेकर आए. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस पवित्र त्योहार के अवसर पर बधाई संदेश दिया. उन्होंने ट्वीट करके कहा, सभी को ओणम की हार्दिक शुभकामनाएं, यह त्योहार आपके जीवन में अच्छा स्वास्थ्य और समृद्धि लेकर आए. बीते कई सालों से ओणम एक वैश्विक त्योहार बन गया है और यह केरल की जीवंत संस्कृति को बयान करता है.

गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई को

195 करोड़ रुपये के ड्रग्स मामले में साबरमती जेल में शिफ्ट किया गया

अहमदाबाद। पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला की हाई-प्रोफाइल हत्या मामले में आरोपी गैंगस्टर लॉरेंस बिश्?नोई को यहां साबरमती सेंट्रल जेल में उच्च सुरक्षा वाले वार्ड में स्थानांतरित कर दिया गया। यह कदम 195 करोड़ रुपये के ड्रग्स मामले में उसकी संलिप्तता के सिलसिले में उठाया गया है। बिश्नोई को पहले दिल्ली की तिहाड़ जेल में रखा गया था, लेकिन बाद में इस साल अप्रैल में गुजरात आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) को सौंप दिया गया। उसकी गिरफ्तारी पाकिस्तान से जुड़ी कथित नशीली दवाओं की तस्करी गतिविधियों से जुड़ी थी। गुजरात एटीएस ने पिछले साल 14 सितंबर को भारतीय तटरक्षक बल के साथ मिलकर कच्छ जिले के जखाऊ बंदरगाह के पास मछली पकड़ने वाले पाकिस्तानी जहाज अल तय्यसा को रोका था। ऑपरेशन में लगभग 195 करोड़ रुपये मूल्य की 40 किलोग्राम हेरोइन बरामद हुई थी। ऑपरेशन में छह

पाकिस्तानी नागरिकों को भी गिरफ्तार किया गया, जो रोके गए जहाज पर सवार थे। जांच में दिल्ली और पंजाब में वितरण के लिए जब्त की गई हेरोइन के साथ पाकिस्तान से भारत में नशीले पदार्थों की तस्करी से जुड़े एक बड़े सांठगांठ का खुलासा हुआ। आगे की जांच में दिल्ली के दो निवासियों की संलिप्तता का पता चला, जिन्हें प्रतिबंधित पदार्थ प्राप्त करना था। उन्हें अधिकारियों द्वारा तुरंत पकड़ लिया गया। यह पाया गया कि मादक पदार्थों की तस्करी का नेटवर्क दो तस्करों द्वारा संचालित किया गया था, जिसमें एक नाइजीरियाई नागरिक भी शामिल था, जो पहले से ही पंजाब की जेलों में बंद थे। गुजरात पुलिस ने 2021 के मोरबी ड्रग्स जब्ती में लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के सदस्य भोला शूटर के रूप में भी जाने जाने वाले भारत भूषण की भूमिका का भी खुलासा किया। भूषण, जिसकी हाल ही में जेल में मौत हो गई, कथित तौर पर जेल परिसर से पंजाब में ड्रग्स नेटवर्क का संचालन कर रहा था।

क्या दिल्ली अफसर के बेटे ने भी किया दोस्त की बेटी का यौन शोषण ?

नई दिल्ली। कुछ रिपोर्टों में दावा किया जा रहा है कि सस्पेंड किए गए दिल्ली के अफसर प्रेमोदय खोखा का बेटा या कोई दूसरा रिश्तेदार भी दोस्त की बेटी से रेप के मामले में शामिल हो सकता है। इस सवाल पर दिल्ली पुलिस ने साफ कहा है कि अब तक की जांच में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला है। नॉर्थ दिल्ली के डेप्युटी पुलिस कमिश्नर सागर सिंह कलसी ने कहा, अब तक की जांच में दो लोग इस अपराध में कथित तौर पर शामिल पाए गए और उन्हें गिरफ्तार किया जा चुका है। आगे की जांच की जा रही है। पुलिस अधिकारी ने आगे कहा कि पीड़िता ने मजिस्ट्रेट के सामने दिए अपने बयान में किसी और का नाम नहीं लिया है। इस केस में नाबालिग लड़की प्रेग्नेंट हो गई थी, जिसका जबरन गर्भपात कराया गया। आरोपी खोखा और उनकी पत्नी सीमा रानी को गिरफ्तार कर लिया गया है। फिलहाल वे जेल में हैं। स्पेशल पुलिस कमिश्नर जितेंद्र पाठक ने कहा है कि किसी अन्य के शामिल होने के दावे वाली रिपोर्ट गलत है। उधर, हाई कोर्ट ने दिल्ली सरकार के महिला और बाल विकास विभाग के निलंबित अधिकारी के नाबालिग लड़की से कथित यौन उत्पीड़न मामले में सोमवार को खुद संज्ञान लिया। हाई कोर्ट ने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि पीड़िता की पहचान किसी भी सूरत में उजागर नहीं हो। दिल्ली

पुलिस, दिल्ली सरकार और केंद्र को मामले में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश मिला और मामले में अगली सुनवाई के लिए 14 सितंबर की तारीख तय कर दी गई। चीफ जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा और जस्टिस संजीव नरूला की बेंच ने मामले का खुद संज्ञान लिया और जनहित याचिका के तौर पर सुनवाई शुरू की। बेंच ने निर्देश दिया कि पीड़िता को जरूरी सुरक्षा और मुआवजा मुहैया कराया जाए। दिल्ली सरकार और दिल्ली पुलिस ने बेंच को बताया कि पीड़ित लड़की को एक सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उसकी हालत नाजुक है।

दिनारा पुलिस की शराब माफिआयों पर बड़ी कार्रवाई 45 लाख रुपए की शराब जप्त

पुष्पांजलि टुडे
ब्यूरो चीफ राजेश नरवरिया

करैरा शिवपुरी। पुलिस अधीक्षक, रघुवंश सिंह, एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय संजीव मुले द्वारा अवैध शराब कारोवारियों एवं अवैध हथियार कारोवारियों पर धरपकड़ कर की जाने वाली कार्यवाही के पालन में उप निरीक्षक संतोष भार्गव थाना प्रभारी दिनारा द्वारा लगातार मुखविर से संपर्क रखते हुए ग्राम उटवाहा में चल रहे चोरी से अवैध जहरीली शराब निर्माण की सूचना से एस डी ओ पी शिवनारायण मुकाती करैरा से संपर्क रखते हुए एवं वरिष्ठ अधिकारियों के संपर्क में रहते हुए ग्राम उटवाहा पहुंचे एवं नदी किनारे मंदिर के सामने अवैध जहरीली शराब कारोबारी पुलिस को देखकर अबैध शराब बनाने की भट्टी से शराब बनाकर ड्रम, आदी बड़े बड़े बर्तन एवं अवैध जहरीली शराब बनाने वाली सामग्री को छोड़कर मौके से जंगल की तरफ भाग गये मौके पर हाथ भट्टी एवं अधिक मात्रा में ड्रम एवं बर्तनो की अन्य सामग्री में भरे अवैध जहरीली शराब कुल 1680 लीटर को मौके पर ही जप्त किया गया एवं मौके पर करीब 25000-/लीटर लहान नष्ट किया गया है मौके पर अवैध शराब के कारोबारियों पर की

गई कार्यवाही में करीब 45 लाख रुपये की अवैध जहरीली शराब को जप्त एवं नष्ट कर सफलता प्राप्त कर अवैध जहरीली शराब को वरामद कर कार्यवाही की गई है।

उक्त कार्यवाही किये जाने में शिवनारायण मुकाती एस डी ओ पी करैरा व उ.नि. संतोष भार्गव थाना प्रभारी दिनारा, निरीक्षक सुरेश चंद्र शर्मा थाना प्रभारी करेरा एवं उ.नि. नीरज राणा चौकी प्रभारी धनरा, सउनि विनोद गौतम, सउनि विवेक भट्ट, सउनि सुल्तान सिंह, प्र. आर. 928 दीपक उपाध्यय, प्र. आर. 401 सेवाराम पाडेय, प्र. आर. 252 हिमांशु चतुर्वेदी, आर. 130 अंकित सिंह, आर. 678 जितेन्द्र रावत 174 नंदकिशोर, आर. 903 आशीष शर्मा एवं थाना करैरा से सउनि जयनारायण, प्र. आर. 490 हिमाचल रावत प्रआर. 1002 शरद कुमार, आर. 165 गोविन्द्र रावत, आर. 843 नरेन्द्र राजपूत, आर. 837 संजीव कुमार, थाना नरवर से सउनि इन्द्र सिंह, आर. 411 मलखान गुर्जर, आर. 49 अजय मांझी एवं थाना सीहोर सिंह उ.नि. सुनील राजपूत, आर. 287 विनोद कुमार, आर. 625 दीपक मौर्य, आर. 213 जितेन्द्र गुर्जर, सैनिक 177 कप्तान रावत थाना अमोला से उप निरी. अरविन्द छारी, सउनि नरेन्द्र यादव, सउनि प्रेमलाल पाण्डेय, आर. 337 शिवम विश्वकर्मा एवं थाना सुखाया से थाना प्रभारी उ. नि. रामेन्द्र सिंह चौहान हमराह फोर्स की सराहनीय भूमिका रही।

चाचौड़ा विधानसभा के अंतर्गत राजनीतिक दलों द्वारा विभिन्न तरीके से जनता एवं आला नेताओं के बीच अपनी छवि बनाने का प्रश्न किया जा रहा है

योगेश शर्मा राजोरिया
पुष्पांजलि टुडे

चाचौड़ा विधानसभा के अंतर्गत राजनीतिक दलों द्वारा विभिन्न तरीकों से जनता एवं आला नेताओं के बीच अपनी छवि बनाने का प्रयास किया जा रहा है। रैलियां निकालकर अपनी शक्ति बताई जा रही है तो दूसरी ओर चाचौड़ा विधायक लक्ष्मण सिंह जी द्वारा चाचोडाके लिए शिक्षा स्वास्थ्य एवं रोजगार से संबंधित कार्यक्रम चलाया जा रहे हैं कुछ समय पूर्व दिव्यांगों को इलेक्ट्रॉनिक साइकिल वितरित की गई एवं 10 सितंबर को निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन चिरायु हॉस्पिटल द्वारा किया जा रहा है सुपर स्पेशलिस्ट विभागों के विशेषज्ञों द्वारा निशुल्क चिकित्सा एवं परामर्श दिया जावेगा यह कार्यक्रम विधायक लक्ष्मण सिंह जी द्वारा शासकीय कन्या महाविद्यालय चाचौड़ा में आयोजित किया जाएगा इसी तरह के जनहितैषी कार्यक्रम विधायक लक्ष्मण सिंह जी द्वारा समय-समय पर चलाए जाते रहे हैं विधायक लक्ष्मण सिंह जी द्वारा चाचोडा के विकास हेतु चाचोडाको जिला बनाने की मुहिम अभी जारी है अगर से चाचोडाजिला बनता है तो चहुमुखीविकास संभव है

खेल जीवन में बहुत जरूरी है

दैनिक पुष्पांजली टुडे
संवाददाता जितेंद्र राय

मुंगावली-सरस्वती शिशु मंदिर में मनाया गया राष्ट्रीय खेल दिवस आज 29 अगस्त को हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचन्द के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया गया विद्यालय में आज भैया बहिनो के बीच विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया जिसमें रस्सी कूद , ऊंची कूद , दौड़ , लंबी कूद आदि कार्यक्रम के प्रारम्भ में माता सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर सरस्वती वंदना की गयी उसके बाद सभी भैया बहिनो को खेल दिवस पर ली जाने बाली शपथ दिलायी गयी फिर क्रम से भैया बहिनो के बजन का तोल किया गया इसी अनुसार उनके खेल प्रारम्भ करवाये गए। विद्यालय के खेल शिक्षक राधेस्याम उपाध्याय ने बच्चो को बताया कि जीवन मे खेल का महत्त्व पड़ाई के साथ साथ जरूरी है खेल से हमारा शरीर स्वस्थ और मस्तिषक भी स्वस्थ रूप से कार्य करता है।

प्रशासन नहीं दे रहा है अतिक्रमण पर ध्यान हो सकता है बड़ा हादसा

दैनिक पुष्पांजली टुडे संवाददाता जितेंद्र राय-

मुंगावली -विगत कई महीने पहले चंदेरी रोड पर हुआ था एक एक्सीडेंट जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई थी अधिकारी इस और ध्यान नहीं दे रहा है तब प्रशासन जागा था और वन वे स्ट्रीट वाला नियम लागू कर दिया था। वह नियम मुश्किल से 15 या 20 दिन चल। हालात जस की तस वही हो गई है, मुख्य केंद्र बस स्टैंड चौराहा से चंदेरी रोड है जहां शाम के समय आम आदमी का निकलना भी व मुश्किल है। ईस ओर जिम्मेदार अधिकारियों का ध्यान नहीं जा रहा है, जब तक बड़ी घटना घटित ना हो।

पीएम मोदी ने निभाया राष्ट्रभ्राता का धर्मः सरोज पांडेय

ब्यूरो चीफ छत्तीसगढ अश्वनी अवस्थी

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राज्यसभा सांसद सरोज पांडेय ने देश के सभी रसोई गैस उपभोक्ताओं को 200 रुपये प्रति सिलेंडर की राहत देने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि देश की बहनों के सबसे बड़े त्यौहार रक्षाबंधन के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रसोई गैस के दाम में भारी कटौती करके राष्ट्रीय भ्राता धर्म का निर्वाह किया है। उन्होंने देश की महिलाओं को सम्मान देने के साथ ही उन्हें सशक्त बनाने के प्रयास किए हैं। मोदी जी ने देश भर में हर घर में उन्नत शौचालय का निर्माण करा कर हमारी बहनों को वह राहत दी है जो दशकों से अपेक्षित थी। मोदी जी ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास उपलब्ध कराए हैं जिसका सर्वाधिक फायदा हमारी बहनों बेटियों माताओं को मिला है। मोदी जी ने भारत की सभी महिलाओं को समानता का अधिकार दिया है। वे सभी महिलाओं को समान रूप से समर्थ होने का अवसर दे रहे हैं।इसीलिए तीन तलाक जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ उन्होंने ऐतिहासिक कदम उठाया है। मोदी जी महिलाओं के विकास, उत्थान और कल्याण के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। महिलाओं को राहत देने के लिए ही उन्होंने गैस सिलेंडर के दाम में बड़ी कटौती की है। जिसका लाभ छत्तीसगढ़ सहित सभी देशवासियों को मिलेगा। उन्होंने

छत्तीसगढ़ की बहनों की ओर से प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

छत्तीसगढ़ की बहनें मोदी जी को भेजेंगी राखी: लता उसेंड़ी-भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं छत्तीसगढ़ शासन की पूर्व महिला बाल विकास मंत्री लता उसेंडी ने केंद्र सरकार द्वारा रसोई गैस सस्ती किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि मोदी जी ने देश की बहनों को राखी का उपहार दे दिया है अब हम बहनें मोदी जी को रक्षा सूत्र भेज कर यह कामना करती हैं कि वह आने वाले समय में भी इसी तरह महिलाओं के हित में कदम उठाते रहें। मोदी जी ने महिलाओं के कल्याण के लिए जितनी योजनाएं संचालित की हैं उतनी आजादी के बाद दशकों तक देश पर शासन करने वाली व्यवस्था ने कुल मिलाकर भी नहीं की। मोदी जी ने जब से देश की शासन व्यवस्था संभाली है तब से भारत की महिलाओं का सम्मान बढा है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में देश ने ऐतिहासिक प्रगति की है। भारत की अर्थव्यवस्था में नारी शक्ति बेहतर योगदान दे रही है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने महिलाओं के लिए प्राथमिकता न दी हो। आज भारत की महिलाएं देश की रक्षा में भागीदारी कर रही हैं तो यह मोदी जी के प्रयासों का परिणाम है। मोदी जी ने देश की गरीब महिलाओं को धुंआ रहित चूल्हे का उपयोग करने के लिए उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त कनेक्शन दिए हैं। छत्तीसगढ़ में हमारी गरीब बहनें भी अब गैस सिलेंडर का इस्तेमाल कर रही हैं। महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए मोदी जी सदैव तत्पर रहे हैं और इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। राखी के त्योहार पर गैस सिलेंडर के दाम में भारी कटौती से महिलाएं काफी खुश हैं।

पीएम मोदी ने दी बहनों को बड़ी सौगात-भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष शालिनी राजपूत ने कहा कि मोदी जी ने राखी के त्योहार पर छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश की बहनों बेटियों माताओं को यह उपहार दिया है। मोदी जी देश की मातृ शक्ति के सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कमजोर आय वर्ग के परिवारों की महिलाओं को राहत देने के लिए उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त में गैस सिलेंडर उपलब्ध कराने के साथ ही सिलेंडर पर 200 रुपये की सब्सिडी पहले से ही दे रखी है। इस राखी पर उज्ज्वला योजना के छत्तीसगढ़ के लाभार्थी 34 लाख परिवारों के साथ ही सभी रसोई गैस उपभोक्ता परिवारों को एकमुश्त बड़ी राहत दी गई है।

लोकायुक्त रीवा की बड़ी ट्रैप कार्यवाही

दैनिक पुष्पांजली टुडे रीवा

नाम आवेदक- श्री निपेंद्र सिंह पिता श्री नारेंद्र सिंह , निवासी ग्राम एवं थाना अमलाई, तहसील बुढार, जिला शहडोल मध्य प्रदेश, आरोपीया- श्रीमती रीनी गुप्ता जिला आबकारी अधिकारी जिला उमरिया, ट्रेप रिश्वत राशि -1,20,000, घटना स्थल - आरोपीय का कार्यालय कक्ष जिला आबकारी अधिकारी कार्यालय जिला उमरिया, **कार्य का विवरण**- शिकायतकर्ता श्री निपेंद्र सिंह द्वारा शिकायत की गई थी कि जिला आबकारी अधिकारी उमरिया श्रीमती रीनी गुप्ता द्वारा शराब जपती का झूठा केस न बनने के आवाज में रिश्वत मांगी जा रही है उसके द्वारा बहुत दिनों से बहुत परेशान किया जा रहा है, इस बात की शिकायत लोकायुक्त संभाग रीवा के पुलिस अधीक्षक श्री गोपाल सिंह धाकड़ को की गई थी , उन्होंने इस शिकायत का सत्यापन कराया तो शिकायत सही पाई गई, वास्तविकता में जिला आबकारी अधिकारी श्रीमती रीनी गुप्ता द्वारा 30,000 रुपए प्रति महीना, 4 महीने का कुल 1,20,000 रुपए की डिमांड की गई , जिस पर से आज ट्रेप कार्यवाही आयोजित की गई और आज दिनांक 29.08.2023 को आरोपिया द्वारा शिकायतकर्ता से 1,20,000 रुपए की रिश्वत लेते हुए ट्रैप किया गया है, भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा रही है।

ट्रेपकर्ता अधिकारी प्रमेंद्र कुमार निरीक्षक-ट्रेप दल के सदस्य-श्री प्रवीण सिंह परिहार उप पुलिस अधीक्षक, श्री प्रमेंद्र कुमार निरीक्षक, सहित 12 सदस्यीय टीम।

जनसुनवाई में 90 आवेदकों के प्रकरणों की हुई सुनवाई

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी
ब्यूरो चीफ सतना

सतना। मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जनसुनवाई में जिले के विभिन्न अंचलों से अपनी समस्याओं का आवेदन लेकर आये 90 आवेदकों की समस्याएं सुनी और समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने अपने कक्ष में बैठकर दूर-दराज से आये ग्रामीण की समस्यायें सुनी। डिप्टी कलेक्टर गोविन्द सोनी ने आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनकर समस्याओं के त्वरित निराकरण करने के संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए। जनसुनवाई में जमीन का सीमांकन कराने, अनुकंपा नियुक्ति, गरीबी रेखा में नाम जोड़ने, खाद्यान पात्रता पर्ची, दाखिल-खारिज कराने, प्रधानमंत्री आवास योजना, अवैध कब्जा हटाने, राशन कार्ड बनाने, विद्युत समस्या, वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, जमीन का कब्जा दिलाने, चिकित्सा सहायता, रोजगार दिलाने, भरण-पोषण और संबल योजना के लाभ संबंधी आवेदन लेकर आवेदक जनसुनवाई में पहुंचे।

भारतीय आतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए खोले द्वार : ताम्रकार

आजादी के अमृत महोत्सव पर चंद्रयान 3 की अपार सफलता के बाद सारी दुनिया में भारत की धाक जम गई है. लोगों ने इसरो के साइट को बार-बार देखा है इसरो का हिस्सा बनने की अभिलाषा संजोय बैठे हैं भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) द्वारा संचालित इंडिया स्पेस वीक के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए प्रवेश के द्वार खोल दिए हैं यह जानकारी जिला समन्वयक श्री कमल किशोर ताम्रकार युवा व इको क्लब गरियाबंद ने हमारे संवाद दाता को बताया कि पूरे भारत से किसी भी राज्य के छात्र /छात्राएं प्रवेश ले सकते हैं अंतरिक्ष कार्यक्रम के अनुसार भविष्य में जो बच्चे इस क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करेंगे उन्हें वरीयता दी जाएगी. बच्चों की रुचि के अनुसार कई तरह के प्रोग्राम जैसे साइबर स्पेस , कंप्यूटर प्रोग्रामिंग , डिजिटल प्रोग्रामिंग , सी सी सी , नासा के अंतरिक्ष से संबंधित प्रोग्राम हेतु ऑनलाइन आवेदन 100 परीक्षा फीस के साथ ऑनलाइन परीक्षा पास करने वाले बच्चों के लिए चयन पश्चात डॉ विक्रम साराभाई स्कॉलरशिप और फैलोशिप देय होगा. विद्यार्थियों को विवरण भरने के लिए नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि , लिंग , राष्ट्रीयता मोबाइल नंबर , राज्य , शहर, पिन कोड, ईमेल आईडी तथा पासपोर्ट आकार का फोटो 100 के बी से कम व संस्थान/विद्यालय/महाविद्यालय का आईडी कार्ड 300 के बी से कम होनी चाहिए. बच्चों को इसरो का सर्टिफिकेट ग्रेडिंग के अनुसार अंतरिक्ष शिक्षा में रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे , विद्यार्थी इंडिया स्पेस वीक द्वारा आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम, पाठ्यक्रम और कार्यशाला में भाग ले सकते हैं इंडिया स्पेस वीक द्वारा चयनित विद्यार्थी अंतरिक्ष एक्सपो का दौरा करने तथा भारत के विभिन्न स्थानों पर स्थित अंतरिक्ष संग्रहालय का भ्रमण और इसरो से रॉकेट का लाइव लॉन्च भी देख सकते हैं विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट का अवलोकन एवं समय 2 से 5 बजे तक प्रवेश संबंधित जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 9335155949 पर संपर्क कर सकते हैं।

विधानसभा चुनाव 2023 के लिए वीवीटी गठित

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

सतन। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अनुराग वर्मा ने विधानसभा चुनाव 2023 के लिए प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न राजनैतिक दलों एवं चुनाव लड़ने वाले अभ्यर्थियों के प्रचार-प्रसार के दौरान बनाई गई सीडी और क्यू सीट के अवलोकन के लिए विधानसभा क्षेत्रवार वीवीटी वीडियो अवलोकन टीम का गठन कर दिया है। यह दल अपने रिटर्निंग आफीसर कार्यालय में उपस्थित होकर वीएसटी से प्राप्त क्यू सीट एवं सीडी का अवलोकन कर प्रतिवेदन व्यय लेखा को देंगे। वीएसटी के नियुक्त अधिकारियों का प्रशिक्षण एक सितम्बर को प्रातः 11 बजे से कलेक्ट्रेट भवन के सभाकक्ष में रखा गया है। जिसमें वीएसटी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य होगी।

शासकीय उमाध्यमिक विद्यालय सहसराम में नहीं आते टाइम से टीचर

पुष्पांजली टुडे

मध्यप्रदेश श्योपुर जिले के शासकीय माध्यमिक विद्यालय सहसराम में 3 टीचर है और 2 अथिति शिक्षक है स्कूल का टाइम 10-00 बजे का है तो टीचर कोई 1-00 बजे आता है कोचिंग पड़ा कर और बच्चे वहीं बैठे रहते हैं 430 में से टोटल 20 बच्चे आते हैं और जब प्राचार्य सबसे पूछा है तो बोला है उन्होंने क्या ऐसे ही आते हैं और प्राचार्य सर से पूछा था की सर आप 2 बजे आते हो तो टीचर केसे टाइम से आयेंगे आप इतनी लेट क्यों आते हो उन्होंने बोला हम ऐसे ही आते हैं और यहां पर रजिस्टर में पहले ही सिग्नेचर कर आते हैं आने से पहले श्री कविता सेंगर आई नहीं है स्कूल में सिग्नेचर हो जाते हैं उनके और ना कोई पढ़ाई करते हैं ना बच्चों का खेल कूदने का समान है उसमें और अपनी मर्जी से आते अपनी मर्जी से जाते हैं जब मन होता है तब आ जाते हैं नहीं होता तो नहीं आते और साइन तो पहले ही कर जाते हैं टीचर का नाम-जगदीश वर्मा, कविता सिंगर, कैलाश सिंह शर्मा।

आईटीएम ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल में स्कूल सेफ्टी एवं जागरूकता अभियान का आयोजन

ग्वालियर। आई.टी.एम ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल में आज 28 अगस्त 2023 को बीएसएफ अकादमी टेकनपुर के अधिकारियों के मार्गदर्शन में स्कूल सेफ्टी एवं जागरूकता अभियान के अन्तर्गत बी.आई.डी.आर., बी.एस.एफ. अकादमी टेकनपुर के अनुदेशको द्वारा स्कूल के शिक्षको और विद्यार्थियों के लिए प्रथम चिकित्सीय उपचार के तौर पर निम्नलिखित विषयों पर भूकंप की तैयारी तथा सीपीआर को लेकर लेक्चर एवं डेमों का आयोजन किया गया। इस दौरान बीएसएफ बीआईडीआर कमांडेंट मसूद मोहम्मद, द्वारा विभिन्न प्रकार की। आपदाओं के बारे में जानकारी दी गई ताकि आपदा के समय शिक्षक व छात्रगण राहत और बचाव के कार्यों को मुस्तैदी के साथ कर सके। कार्यक्रम में 17 शिक्षक एवं कक्षा छः और नौ के 350 विद्यार्थी शामिल हुए।

कार्यालय नगर पालिका परिषद गोहद जिला भिण्ड (म. प्र.)

Email:cmogohad@mpurban.gov.in Add- Fort Road, Ward No.14, Gohad, District Bhind (M.P

क्रमांक / न.पा./ लो. नि. / 2023/1103 गोहद, दिनांक 28/08/2023

// संक्षिप्त ऑनलाईन निविदा आमंत्रण सूचना //

एतद द्वारा केन्द्रीयकृत पंजीयन व्यवस्था के तहत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत समस्त ठेकेदारों से ई-टेण्डरिंग के माध्यम से नगर पालिका परिषद गोहद के अंतर्गत कार्य हेतु निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। इच्छुक ठेकेदार नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के दिनांक 02 अगस्त 2021 से प्रभावी ISSR (भवन, रोड़, पेयजल) व आज दिनांक तक संशोधित सहित निविदा प्रपत्र अपेन्डिक्स 2.10 पर प्रतिशत दरों के आधार पर ऑनलाईन निविदाएं प्रकाशन दिनांक से दिनांक 28.09.2023 को सायं 5:30 बजे तक प्रस्तुत कर सकते हैं।

क्र.	NIT क्रमांक व दिनांक	टेण्डर नम्बर
1	क्रमांक/न.पा./लो.नि./2023/11082 दिनांक 25.08,2023	2023-UAD-302408-1 2023-UAD-302408-2 2023-UAD-302408-3 2023-UAD-302408-4 2023-UAD-302408-5

कार्य के संबंध में विस्तृत जानकारी वेबसाईट www.mptenders.gov.in पर एवं कार्यालयीन समय में लोक निर्माण शाखा में देखी जा सकती है। निविदा में किया गया कोई भी संशोधन उक्त वेबसाईट पर किया जावेगा, पृथक से कोई भी प्रकाशन नहीं किया जावेगा। अतः सम्बंधित जानकारी उक्त वेबसाईट पर ही देखी जावे।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद गोहद
जिला भिण्ड (म.प्र.)

विश्व कीर्तिमान बनेगा भाई बहन का प्रेमः अशोक भारद्वाज

विश्व की सबसे बड़ी राखी का बनेगा नया रिकॉर्ड

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड (मेहंगाव)। रक्षाबंधन के पावन पर्व के शुभ अवसर पर भाई बहन के अनुपम पावन प्रेम की प्रतीक

राखी (रक्षा सूत्र) के माध्यम से भिंड को पूरे विश्व भर में पहचान दिलाने भाजपा आर्थिक प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश के प्रदेश सह संयोजक अशोक भारद्वाज के द्वारा मेहगांव में अपने ग्वालियर रोड स्थित निज निवास पर भव्य आयोजन किया जा रहा है। चंबल क्षेत्र के भिण्ड जिले में हो रहे इसे अनूठे आयोजन से भाई - बहन के मधुर रिश्ते की मजबूत डोर विश्व पर परचम लहराने के संकल्प का नतीजा होगा गिनीज बुक रिकॉर्ड में दर्ज। यह अदभुत एक हजार फुट से भी अधिक लम्बाई लिये बीच में राखी का गोला पच्चीस फुट का रहेगा,अगल - बगल की राखी की डोर लगभग पांच सौ पांच सौ फुट की लम्बी रहेगी।

इस विशाल राखी को बांधने में हजारों की संख्या में लाडली बहनों से राखी बंधवा कर उन्हें भाई अशोक भारद्वाज की तरफ से तोहफे के रूप पारंपरिक साड़ी भेंट की जाएगी। इस अलबेले कार्यक्रम में गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड (जज श्री ऋषिनाथ), वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड (जज हिमांशु तिवारी), एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड एवं इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड (जज भानु प्रताप सिंह व नवनीत सिंह), ओएमजी बुक ऑफ रिकॉर्ड (श्री दिनेश) के प्रतिनिधि/ जज भी शामिल होंगे। 31 अगस्त 2023 को इस भव्य कार्यक्रम की तैयारियों में जुटे कारीगरों ने लकड़ी, थर्मोकोल, कपड़ा, ऊन, धागा,साड़ी आदि को मिला कर सुंदर अनुपम राखी बनाई जा रही है। जानकारी अनुसार बहनों को दिये जाने वाले तोहफे बनाने के लिए कारीगर दिल्ली, कोटा,ग्वालियर से आए हैं।

अम्बरीष शर्मा ने दबोह पहुंचकर हजारो बहनों से बंधाई राखी, उपहार में दी बहनों को साड़ियां

दबोह। लहार तहसील के दबोह नगर के लक्ष्मी मैरिज गार्डन में सोमवार की शाम रक्षाबंधन कार्यक्रम आयोजित किया गया।इसमें मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अम्बरीश शर्मा (गुड्डू भैया)मौजूद रहे।मुख्य अतिथि अम्बरीश शर्मा ने कार्यक्रम में पहुंचीं करीब एक हजार से अधिक बहिनों से राखी बंधवाकर आशीर्वाद प्राप्त किया और उपहार में एक-एक साड़ी भेंट की ।कार्यक्रम में बोलते हुए अम्बरीश शर्मा ने कहा कि आज रक्षाबंधन कार्यक्रम में आकर आप लोगों ने मुझे जो प्यार और स्नेह से भरा रक्षा सूत्र बांधा और आशीर्वाद प्रदान किया है उसके लिए मैं आप सभी का हमेशा ऋणी रहूंगा। उन्होने कहा कि मैं आप सभी का छोटा भाई हूं और आपको जब मेरी जरूरत होगी तब मैं आपके साथ खड़ा रहूंगा।इसके बाद उन्होने लहार में 01 सितंबर से आयोजित की जा रही राजन जी महाराज की नौ दिवसीय रामकथा की 31 अगस्त को निकाली जा रही शोभायात्रा में शामिल होने के लिये आमंत्रित किया।इस दौरान कार्यक्रम में तमाम क्षेत्रीय नेता मौजूद रहे।

भर गया लहार विधायक के पाप का घड़ा,अब लहार में आएगी भाजपा सरकार-अम्बरीष शर्मा-वहीं उन्होंने आगामी विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी बनने के सवाल पर कहा कि सम्भावित प्रत्याशी तो मैं हमेसा रहा पर पार्टी क्या निर्णय लेगी यह अभी कहना मुश्किल है।आगे उन्होंने कहा कि चाहे पार्टी मुझे टिकिट दे या न दे पर आप सभी के बीच मे हमेसा सेवारत रहूंगा।वहीं उन्होंने लहार विधानसभा में 35 साल के कॉग्रेस शासन को लेकर कहा कि इस बार लहार से भाजपा विजयी होगी क्यों कि अब लहार विधायक डॉ.गोविंद सिंह के पापो का घड़ा अब भर चुका है और जनता भी अब बदलाब के मूड में है।आगे उन्होने कहा कि प्रदेश के मुखिया शिवराज सिंह ने लाड़ली बहिना योजना की शुरूआत की है और अब हमें यह योजना आगे भी चालू रखनी,तो इसके लिए भाजपा की सरकार बनानी है।अबकी बार लहार में भी भाजपा को ही जिताना है।

लहार विधायक और बरसे अम्बरीष शर्मा बोले लहार विधायक की मानसिकता है खराब-लहार विधायक डॉ.गोविंद सिंह पर निशाना साधते हुए अम्बरीष शर्मा ने कहा कि लहार विधायक की मानसिकता खराब है।कभी वह व्यक्ति कहता है कि हमे रामायण से नींद नही आती,कभी कहता है कि कथा वाचक प्रदीप मिश्रा व बागेश्वर बाबा धीरेंद्र शास्त्री फर्जी है और यह लोग भाजपा के एजेंट हैं।उन्होने कहा कि लहार विधायक को बोलने की तमीज नही है कभी वह सिंधिया के बारे में गलत बोलते हैं।उन्होंने कहा कि जिस तरह से लहार विधायक बजरंग दल और आरएसएस के खिलाफ बयान देते हैं वह उनकी औकात नही है।आगे उन्होंने कहा कि अभी हाल ही में दबोह थाना क्षेत्र के ग्राम देवरी के पूर्व सरपंच मातादीन बघेल ने भाजपा में आने को घोषणा की तो उनपर कॉग्रेस के विधायक का फोन गया और उनको जान से मारने की धमकी दी कि मैं तुमको मरवा दूंगा।ऐसा बयान भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य अम्बरीष शर्मा ने आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रेसवार्ता में दिए।

राष्ट्रीय स्वयं सेवा योजना की सेविकाओं हॉस्पिटल और थाने पहुंचकर मनाया राखी का त्यौहार

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक
पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। वसुधैव कुटुम्बकम्,यह संस्कृत श्लोक हमें बताता है कि सारा विश्व एक परिवार है।इसी को ध्यान में रखते हुए दिनांक 28 अगस्त 2023 को राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयं सेविकाओं द्वारा सभी के लिये एकता का संदेश वसुधैव कुटुंम्बकम के साथ रक्षाबंधन का उत्सव मनाया गया।इस अवसर पर स्वयं सेविकाओं ने रक्षाबंधन के उत्सव को एक नए प्रकार से बनाने की मुहिम छेड़ी। जिसके अंतर्गत स्वयं सेविकाओं ने कंपू थाने में जाकर ऑन ड्यूटी स्टाफ जो इस रक्षाबंधन के अवसर पर अपने घर नहीं जा पाते हैं और सदैव हमारी सुरक्षा में तत्पर रहते हैं उनको राखी बांधकर रक्षाबंधन का उत्सव मनाया। छात्राओं ने महाविद्यालय,अस्पताल के सुरक्षा गार्ड इन सभी को राखी बांधी और उन्हें सदैव हमारी सुरक्षा करने के लिए धन्यवाद किया।छात्राओं ने कंपू स्थित कमला राजा चिकित्सालय में जाकर तथा नर्सिंग स्टाफ को राखी बांधकर उनके साथ भी रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया। इसके बाद हमें भोजन, औषधी, ऑक्सीजन आदि रूप में मदद करने वाले पेड़ पौधो को राखी बांधकर पर्यावरण की सुरक्षा का संदेश दिया।इस कार्यक्रम में स्वयं सेविकाओं ने स्वयं द्वारा बनाई गयी राखीयोका प्रयोग किया।यह कार्यक्रम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.एम आर कौशल के संरक्षण में और राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वीणा शुक्ला, डॉ.कृष्ण सिंह और डॉ.संगीता सोमवंशी के मार्गदर्शन में किया गया।इस कार्यक्रम में स्वयंसेविका ने अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सदैव हमारी सुरक्षा करने वाले डॉक्टर महत्वपूर्ण योगदान दिया।

11 वर्षीय बालिका के साथ बलात्कार करने वाले आरोपी जनका उर्फ जनक सिंह जाटव को आजीवन कारावास सहित

30 हजार रुपये के अर्थदण्ड से दंडित किया

जौरा, जिला मुरैना के न्यायालय श्री अनुज त्यागी, प्रथम अपर सत्र जिला सत्र न्यायाधीश जौरा मुरैना ने धारा 376, 452, 432, 450, 376, 376 भादवि, 3, 4, 5, 6 एक्ट के आरोपी जनका उर्फ जनक सिंह जाटव को आजीवन कारावास से दंडित किया। मीडिया प्रभारी श्रीमती रश्मि अग्रवाल ने बताया है कि दिनांक 16.02.2020 के दोपहर करीब 01:00 बजे की बात है अभियोक्त्री की मॉ खेत पर निहार (घास) लेने गयी थी औरा पापा कारीगरी करने गये थे तो अभियोक्त्री अपनी छोटी बहन व भाईयों के साथ घर पर थी तभी उसके गॉव का लडका जनका उर्फ जनक सिंह जाटव उसके घर में घुस आया और अभियोक्त्री के दोनो भाईयों को बोला चल घर से जा, तो वे दोनों घर से डर के मारे भाग गये और अभियोक्त्री की छोटी बहन से बोला जा दुकान से पुडिया ले आ तो वह पुडिया लेने चली गयी तभी जनका ने घर के बाहर और कमरे का अन्दर का किवार (दरवाजा) अन्दर से बंद कर लिया और अभियोक्त्री की पायजामी और चडडी उतार दी और अपना पेन्ट व चड्डी उतार दी और अभियोक्त्री के उपर लेटकर जबरदस्ती उसके साथ गलत काम किया अभियोक्त्री चिल्लाई तो उसके मुंह में कपडा ठूस दिया तब तक उसकी मम्मी आ गयी जिसने दरवाजे में धक्का मारा तो दरवाजा खुल गया अभियोक्त्री की मॉ ने आरोपी जनका उर्फ जनक सिंह जाटव को पकडने का प्रयास किया किंतु वह भाग गया। माननीय न्यायालय ने विशेष लोक अभियोजक श्री गिरजेश खत्री के तर्को को स्वीकार करते हुये आरोपी जनका उर्फ जनक सिंह जाटव को बलात्कार के जुर्म में आजीवन कारावास से दण्डित कराया। प्रकरण में सफलता पाने में जिला अभियोजन अधिकारी श्री रोशनलाल छापरिया जी का मार्गदर्शन विशेष रहा।

राष्ट्रीय क्रांति मोर्चा के राष्ट्रीय सचिव राजेश बर्डे ने जनसुनवाई में जाकर सचिव किशोर यादव के खिलाफ सौपा ज्ञापन

राष्ट्रीय सचिव राजेश बर्डे ने सचिव किशोर यादव के ऊपर जल्द से जल्द कार्यवाही की मांग करें

मुन्ना खान, पुष्पांजलि टुडे

खरगोन। मुख्यमंत्री का सपना हैं की सरकारी योजनाओं का लाभ गांव - गांव घर-घर पहुंचे, लेकिन ग्राम पंचायत रेटवा के सचिव किशोर यादव के द्वारा गरीब आदिवासियों को सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित रखा जा रहा हैं, जिससे राष्ट्रीय क्रांति मोर्चा संगठन के राष्ट्रीय सचिव राजेश बर्डे भड़क उठे, राष्ट्रीय सचिव राजेश बर्डे ने किशोर यादव के ऊपर आरोप लगाया हैं कि 7 महीने से संबल योजना की 6 फाईले झोले में लेकर घूम रहे हैं, और अभी सचिव किशोर यादव ग्राम रेटवा से घुघरियाखेड़ी ट्रांसफर करवा लिया, राष्ट्रीय सचिव राजेश बर्डे ने कहा है कि जो जनता के प्रति, सरकार के प्रति इतनी लापरवाही करें, ऐसे कर्मचारी सचिव किशोर यादव को पंचायत में बैठने का कोई अधिकार नहीं हैं, ऐसे कर्मचारियों के साथ जल्द से जल्द कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने की मांग करें, राष्ट्रीय क्रांति मोर्चा संगठन के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

एक शाम गौ माता के नाम भजनों पर देर रात तक झूमे श्रद्धालु

पुष्पांजली टुडे

लोगों ने गौसेवार्थ के लिए राशि भेंट की।जागरण का दौर

बेंगलुरू। नवयुवक मंडल सुकंतकट्टे मागड़ी रोड के तत्वाधान में एक शाम गौ माता के नाम भजन संध्या का आयोजन तिम्माका पटेल मंडप में किया गया। जागरण का शुभारंभ महादेव जी की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलित से हुआ। इस कार्यक्रम में महादेव भजन मंडली के गायक राजूराम चोयल, श्रवण माली, चुनाराम भायल, बगदाराम सिंदडा ओमप्रकाश पंवार एवं सुरेश आगलेचा ने राजस्थानी लोक भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर कर दिया । इस अवसर पर सर्व राजस्थानी समाज के देर रात तक चला । इस कार्यक्रम में सुंकतकट्टे, लगैरी बडेर के बड़ी संख्या में पदाधिकारी मौजूद रहे। मच सचालन मोहन सीरवी ने किया।

90 के गोल्डन पीरियड की एक्शन ड्रामा और म्यूजिकल फिल्मः चट्टान

खरगोन जिले से मुन्ना खान पुष्पांजली टुडे

90 का दशक हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर रहा है द्य लव स्टोरी, प्रतिशोध,भावप्रवण या फिर म्यूजिकल सिनेमा हो...उस दौर की फिल्में ऑडियंस और सिनेमाई जगत में सर चढ़कर बोलती थी द्यवही वजह है कि बदलते प्रतिमानों के बीच आज भी कुछेक संवेनशील और सजक फिल्मकार 90 की फिल्मों का मोह छोड़ नहीं पाते...स्टोरी अप्रोच,स्क्रिप्ट एंगल और डायलॉग्स का नजरिया और तकनीकी क्रांति के बीच भी उनमें वैसे ही कलेवर की फिल्में बनाने की चाह बरकरार है द्य 90 दशक के सिनेमा में रचे बसे अपनी आँखों में वैसा ही नेचुरल सिनेमा बनाने की सोच रखते हैं फिल्मकार सुदीप डी.मुखर्जी। तभी तो जब उन्होंने रंजन कुमार सिंह, लेख टंडन और प्रकाश मेहरा जैसे फिल्मकारों से डायरेक्शन की विधिवत ट्रेनिंग लेकर स्वतंत्र रूप से निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म का बीड़ा उठाया तो फिल्म का प्रारूप 90 के सिनेमा को ही चुना और इसी बैकड्रॉप पर फिल्म चट्टान बनी .जांबाज पुलिस अफसर और उसके परिवार को सच्चाई और अपने कर्तव्य के खातिर सिस्टम के खिलाफ जाकर कितना संघर्ष करना पड़ता है कि किन मरहलों के बीच गुजरना पड़ता है इस भिड़ंत में उसे क्या कुछ गंवाना पड़ता है यही चट्टान में दिखाया गया है रियल स्टोरी के साथ।

न्याय संगत किरदार-लेखक निर्देशक सुदीप डी.मुखर्जी ने जब 1990 के बैकड्रॉप पर एक घटित मार्मिक घटनाक्रम पर स्टोरी,स्क्रीनप्ले और डायलॉग्स के साथ एक्शन ड्रामा और म्युजिकल फिल्म चट्टान का ड्राफ्ट फाइनल किया तो उनके दिलो दिमाग में यह विजन आईने की तरह साफ रहा कि स्क्रिप्ट के अनुसार सभी किरदार सहज और स्वाभाविक लगे द्य मध्य प्रदेश के कस्बे देवपुर के पुलिस थाने में तैनात पुलिस इंस्पेक्टर रंजीत सिंह के रोल के लिए उन्होंने कई अभिनेताओं से संपर्क किये उन्हें एक ऐसा अभिनेता उस जांबाज इंस्पेक्टर के रुप मे चाहिए था जो कि समाज के लिए खतरा बने डॉन और उनकी गैंग के खिलाफ शंखनाद करे, बिना किसी समझौते के और वो भी अपनी पत्नी परिवार के दायित्व के साथ.....इस अहम रोल के लिए हिंदी, गुजराती, राजस्थानी, मलयालम, तामिल आदि फिल्मों में अपने अभिनय कौशल का लोहा मनवा चुके जीत उपेंद्र का चयन किया द्य परिवारिक जवाबदेही सँभालने के साथ अपने जांबाज इंस्पेक्टर पति के साथ उसकी नौकरी और निभाने में बराबर की साझेदारी करने वाली पत्नी रजनी की मुख्य भूमिका में तहकीकात, अधिकार, साँस, आशीर्वाद, बंधन, सिसकी, आहट, शांति, मोहनदास बी.ए.एल.एल.बी आदि विभिन्न धारावाहिकों में अपनी एक्टिंग की धाक जमा चुकी अभिनेत्री राजनिका गांगुली को अनुबंधित किया द्य जिन्होंने एम.पी.की टिपिकल गर्भवती पत्नी दिखने के लिए 20 किलो अपना वजन बड़ाया और अपने रोल के साथ न्याय किया। चट्टान का सबसे चैलेंजिंग रोल है गलत सलत काले धंधों में लिप्त डॉन मुन्ना भाई का...जिसका कदम कदम पर इंसपेक्टर रंजीत से टकराव होता है द्य इस रोल में बहुत शेड्स हैं,वह धाकड़ पर्सनॅलिटी का मालिक तो है ही साथ ही कूटनीति के बल पर अपने काम निकलवाने में भी माहिर है। इस फुल फलेश विलन का रोल 300 से भी अधिक फिल्में कर चुके तेज सप्रू को सौंपा है द्य वह पहली बार चट्टान में स्वतंत्र रूप से खलनायक बने हैं द्य उन्होंने अपना किरदार बेहतर निभाया है। चट्टान में सब इंस्पेक्टर अजय कुमार का चरित्र भी काफी महत्वपूर्ण है इसका पूरा मैनरिजम, इंस्पेक्टर रंजीत के साथ सहयोगी अपने सिद्धांतों पर काम करने वाले पुलिस सहकर्मी का है द्य इस किरदार को आत्मसात किया है कयामत से कयामत तक, शिवा,पापी, जो जीता वही सिंकदर, नरसिम्हा, बेटा,दिल आदि 400 फिल्मों में विलन का किरदार करने वाले अभिनेता ब्रिज गोपाल ने...उनके लिए भी यह रोल चुनौतीपूर्ण रहा द्य अपने पूरे कैरियर में ब्रिज गोपाल ने पहली बार पोजेटिव रोल किया है द्य रंजीत की मुन्नाभाई के हाथों मारे जाने के बाद एक मात्र शेष रहे अजय कुमार और उसकी पत्नी की भुमिका इस कहानी का अहम हिस्सा है द्य उन दृश्यों में ब्रिज गोपाल का अभिनय देखते ही बनता है ...

90 के स्टाइल का म्यूजिक-चट्टान में नृत्य निर्देशन,संपादन,लेखन और निर्देशन के अतिरिक्त सुदीप डी मुखर्जी ने गीतकार और संगीतकार की भी जिम्मेदारी का निर्वाह कुशलता से किया है द्य उन्होंने सांग्स राइटिंग सिचुएशनल,मीनिंगफुल और म्यूजिक अरेंजमेंट इंटीलीयूड, सिंगर्स की वॉइस क्वालिटी बिलकुल 90 के एरा की रखी है कुमार सानू,प्रिया भट्टाचार्य, देवाशीष दासगुप्ता, प्रीथा मजुमदार,आबिद जमाल और अनन्या बासु ने गायिकी का बेहतरीन रंग जमाया है।

नयनाभिराम लोकेशंस-बहुचर्चित एक्शन ड्रामा म्यूजिकल फिल्म चट्टान का सबल पक्ष इसके नयनाभिराम बेहद खूबसूरत लोकेशंस हैं द्यकालिकापुर राजबाड़ी, आमार कुटीर, आदुरिया फारेस्ट, बोलपुर शांति निकेतन (पश्चिमबंगाल),बृन्द्रावन गार्डन,कावेरी नदी वशिन मैसूर (कर्नाटक), सूचक बंगला,सुतार वाड़ी,बी .बी.हाउस,बलबंत विला (मढ इस लैंड),फिल्म सिटी (मुंबई),संक्रमण चम्पक स्टूडियो (मुंबई)।

चट्टान की टीम और सहयोगी-

एन .एन.गांगुली और बेला गांगुली प्रस्तुत सर्वमंगला इंटरनेशनल और के.बी.इंटरप्राइजेज के सहयोग से, 7 स्टार क्रिएटिव इंटरनेशनल कृत निर्मात्री राजनिका गांगुली।

नृत्य निर्देशन गीत -संगीत, संपादन कथा पटकथा-संवाद और निर्देशक सुदीप डी.मुखर्जी। छायांकन -राजेश कनोजिया कार्यकारी निर्माता के.वी. गुरु प्रसाद एक्शन-हीरा यादव बैक ग्राउंड म्यूजिक-कमल सिंह भुनावत। चट्टान सर्वत्र भारत में 22 सितम्बर 2023 को प्रदर्शित हो रही है।

स्वतंत्रता-संग्राम और नागरिक

कभी-कभार: असंख्य नागरिकों के बलिदान को याद करें तभी स्वतंत्रता का उत्सव सार्थक होगा।

अशोक वाजपेयी

> महात्मा गांधी जैसे क्रांतिकारी नेता के नेतृत्व के बिना, उनके 'करो या मरो' जैसे आह्वान के बिना, इतना जनसमर्थन जुट पाना निश्चय ही संभव नहीं था। पर उसमें भारतीय नागरिकों ने जो क्रांतिकारी भूमिका निभाई उसका व्यापक एहतराम किया जाना और उनके प्रति देश की व्यापक कृतज्ञता व्यक्त किया जाना बाक़ी है।

स्वतंत्रता दिवस पर हर वर्ष, रस्मी तौर पर, उस समय के बड़े नेताओं जैसे महात्मा गांधी, नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद आदि, भगतसिंह और अन्य शहीदों को तो याद किया जाता है पर अक्सर उन असंख्य नागरिकों को कोई ज़िक्र नहीं होता जिन्होंने भारत के कोने-कोने में स्वतंत्रता-संग्राम में हिस्सा लिया था और उनमें से अनेक ने जेल की यातना भी भोगी।

यह ठीक है कि स्वतंत्रता का मूल स्वप्न तो इन यशस्वी नेताओं ने ही देखा था लेकिन उसे साकार करने में नागरिकों की कितनी-क्या-कैसी भूमिका थी इस पर हमारा ध्यान कम ही जाता है। यह भी याद रखना चाहिए कि उस समय ये नागरिक नहीं औपनिवेशिक शासन की प्रजा थे और उन्हें बाद में, स्वतंत्र भारत के नए संविधान में विधिवत नागरिक बनाया था।

सारे संविधान के केंद्र में नागरिक ही है। 'हम, भारत के लोग' से शुरू होने वाला संविधान इन लोगों को यानी हमको लोकतंत्र का, गणराज्य का, नागरिक बनाता है।

भले उसकी याद धुंधलाती और मिटाई जा रही है, ऐसे अनेक दृश्य हम याद कर सकते हैं जिनमें नागरिकों की बड़ी संख्या 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लेने सड़कों पर आ गई थी जिनमें हर धर्म-वर्ण-लिंग-जाति आदि के लोग कंधा से कंधा मिलाकर शामिल थे। उस जनांदोलन को, जितना समर्थन मिला था वह आज तक अद्वितीय बना हुआ है: इतना सैलाब पूरे भारत में हर जगह न पहले कभी उमड़ा, न उसके बाद कभी। ब्रिटिश शासन को इस व्यापक जन-समर्थन ने ही भारत को स्वतंत्र करने की ओर ढकेला।

महात्मा गांधी जैसे क्रांतिकारी नेता के नेतृत्व के बिना, उनके 'करो या मरो' जैसे आह्वान के बिना, इतना जनसमर्थन जुट पाना

निश्चय ही संभव नहीं था। पर उसमें भारतीय नागरिकों ने जो क्रांतिकारी भूमिका निभाई उसका व्यापक एहतराम किया जाना और उनके प्रति देश की व्यापक कृतज्ञता व्यक्त किया जाना बाक़ी है।

हम अपने नेताओं के साथ-साथ इन असंख्य नागरिकों के बलिदान और अवदान को याद करें तभी हमारा स्वतंत्रता का उत्सव मनाना नैतिक और सार्थक होगा। तरह-तरह के स्मारक बनाने की आजकल होड़ सी लगी है। शायद यह मुक़ाम है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के 76 बरस बाद सही, हम इन नागरिकों को याद करते हुए एक राष्ट्रीय स्मारक बनाएं। वह ऐसी जगह पर होना चाहिए जहां हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय समारोह मनाया जा सके: प्रधानमंत्री लाल किले से नहीं, इस स्मारक से देश को संबोधित करें।

लोककाव्य में गांधी

आज जब कुछ शक्तियां गांधी को लांछित करने के सुनियोजित अभियान में लगी हैं, तब 'ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित साहित्य में गांधी' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक याद दिलाती है कि गांधी कैसे अपने समय के लोकमानस में पैठे हुए थे।

एक के दले ते दस सामुहे दिखाई देत,
दस के दले से दस शतस जुहावते।
एक कीन्हे बंद दस बंद होत बंदेखाने,
दस के सामने दस सहस समावते।
एक कीन्हें कत्ल दस कत्ल को तैयार होत,
दस कीन्हे सर शत सहस झुकावते।
हार थकी भृत्यशाही दल के दरारे देख,
दिल के फरारे 'बली' गांधी के प्रभावते।

यह पद्य किन्हीं कवि विनीत 'बली' की रचना है, जो उन्होंने 'वंदेमातरम गांधी गौरव' शीर्षक पुस्तक में 92 अन्य पदों के साथ लिखे और तत्यौंथर, रीवा से पुस्तकाकार प्रकाशित किए थे और जिसे ब्रिटिश सरकार ने 30 मार्च 1931 को प्रतिबंधित किया था। ऐसी ही अन्य प्रतिबंधित हिंदी कविताएं राकेश पांडेय ने राष्ट्रीय अभिलेखागार से नवेरकर डायमंड बुक्स से 'ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित साहित्य में गांधी' शीर्षक से प्रकाशित की हैं।

पहला संस्करण 2021 में प्रकाशित हुआ पर मेरे पास अब पहुंचा है। 415 से अधिक पृष्ठों की इस पुस्तक में जो कवि शामिल हैं उनके नाम तक आज कोई नहीं जानता। दिलचस्प यह है कि इन कवियों ने अनेक पारंपरिक और लोकछंदों, कई बोलियों में कविताएं लिखी हैं जिनमें सवैये, ग़ज़ल, कव्वाली, तेरहमासा, गीत आदि कई प्रकार हैं।

'राधेश्याम की रामायण की तर्ज पर' संकलित है' अटल राज की कुंजी अर्थात महत्मा जी की पुकार' पुस्तक में यह कविता जो 30 मार्च 1931 को प्रतिबंधित हुई:

चलने दो हाथ निहत्थों पर
जत्थों पर जत्थे आवेंगे।
गांधी के एक इशारे पर,
लाखों मत्थे चढ़ जावेंगे।।
मरते हैं बीर समर में ही,
कायर सौ बार मरा करते।
यह जीवन जाल ज्वाल हुआ,
मर कर भी अमर कहावेंगे।।

आजकल जब कुछ शक्तियां गांधी को बदनाम और लांछित करने के सुनियोजित अभियान में लगी हैं तब यह पुस्तक हमें याद दिलाती है कि गांधी कैसे अपने समय के लोकमानस में पैठे हुए थे। अज्ञातकुशील लोग उन पर कविताएं लिखने का जोखिम उठा रहे थे और उनका साथ दे रहे थे। ऐसी लोकव्याप्ति भारत में शायद ही कभी किसी राजनेता को मिली है। ***(साभार- दवायर)***

अपनी बात
संपादकीय

ध्रुवीकरण और अज्ञान

> भारतीय समाज अभी ऐसे दुश्चक्र में फंसा हुआ है, जब राजनीतिक जनमत तथ्य और तर्क से नहीं, बल्कि बनाई या थोपी गई निराधार धारणाओं से तय हो रहा है। एक हालिया सर्वे का यही निष्कर्ष है।

तमाम समाजों के अनुभवों से यह साफ हो चुका है कि राजनीतिक ध्रुवीकरण का सामूहिक अज्ञान से करीबी रिश्ता है। ये दोनों पहलू एक दूसरे के लिए खाद-पानी का काम करते हैं। इनमें किससे किसकी शुरुआत होती है, यह कहना कठिन है। लेकिन एक बार जब दोनों परिघटनाएं समाज पर हावी हो जाती हैं, तो फिर वे एक-दूसरी जमीन मजबूत करने लगती हैं। उस हाल में समाज में ऐसा दुश्चक्र बनता है, जिससे निकलना आसान नहीं रह जाता। दुर्भाग्यवश भारतीय समाज अभी ऐसे दुश्चक्र में फंसा हुआ है, जब राजनीतिक जनमत तथ्य और तर्क से नहीं, बल्कि बनाई या थोपी गई निराधार धारणाओं से तय हो रहा है।1980 के बाद जन्मे लोगों के नजरिए परयूगोव-मिंट-सीपीआर के हालिया सर्वे का यही सार है। सर्वे के मुताबिक इस उम्र वर्ग के 42 लोगों में सियासी ध्रुवीकरण की स्थिति स्ट्रॉन्ग यानी अडिग अवस्था में है, जबकि 24 अन्य प्रतिशत लोगों थोड़े उदार नजरिए के साथ ध्रुवीकृत हैं। इस तरह सियासी ध्रुवीकरण के वर्ग में इस उम्र वर्ग की भारतीय आबादी का दो तिहाई हिस्सा फंसा हुआ है।

अब उनके ज्ञान का स्तर देखिए। 46 प्रतिशत लोगों की राय है कि भारत को जी-20 की अध्यक्षता नरेंद्र मोदी की प्रभावी विदेश नीति की वजह से मिली है। यह रोटेशनल आधार पर मिली है (जो तथ्य है), ऐसा मानने वाले सिर्फ 24 प्रतिशत लोग हैं। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के समर्थक लोगों के बीच 54 प्रतिशत मानते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था चीन से बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। जबकि इंडिया गठबंधन के समर्थकों में ऐसा मानने वालों की राय 30 प्रतिशत है। अब धारणाओं पर गौर करें। एनडीए समर्थकों के बीच लगभग लगभग 55 प्रतिशत लोगों की राय है कि केंद्रीय एजेंसियों का विपक्ष के खिलाफ दुरुपयोग नहीं हो रहा है। जबकि इंडिया समर्थक दो तिहाई लोग मानते हैं कि दुरुपयोग हो रहा है।

खुलेआम हत्याओं से चिंता

> गवाह किसी भी मुकदमे की महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं। आरोपी को सजा होना काफी हद तक उसकी गवाही पर निर्भर करता है। गवाहों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जाती है, तो फिर गंभीर आपराधिक मामलों में इंसाफ की उम्मीद भी छोड़ देनी होगी।

बिहार में हाल में सरेआम हत्याएं हुई हत्याओं ने राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति को लेकर चिंता पैदा कर दी है। पिछले दिनों अररिया में पत्रकार विमल कुमार यादव की गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। उसके अलावा कम से कम महत्त्वपूर्ण मुकदमों के तीन अन्य गवाह भी गोलियों का निशाना बन चुके हैं। गौरतलब है कि इन सभी मामलों में निशाना बने लोगों को पहले से धमकियां मिल रही थीं, लेकिन उनकी सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम नहीं किए गए। इसीलिए इन घटनाओं से राज्य सरकार आलोचनाओं के केंद्र में आई है। पत्रकार विमल कुमार यादव अपने छोटे भाई और सरपंच शशि भूषण की चार वर्ष पूर्व हुई हत्या के एकमात्र गवाह थे। उन्हें कई मौकों पर भाई के हत्यारों के खिलाफ गवाही देने से रोका गया था। बात नहीं मानने पर अंजाम भुगतने की चेतावनी दी गई थी। लेकिन उन्होंने गवाही दी। नतीजा 17 अगस्तकी सुबह उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। इस घटना के तीन दिन बाद बेगूसराय जिले के बछवाड़ा में एक रिटायर्ड शिक्षक जवाहर चौधरी को गोलियों से भून डाला गया। अपने छोटे पुत्र नीरज चौधरी की 2021 में हुई हत्या के मामले में वे चश्मदीद गवाह थे। आरोपी उन्हें इस मामले में पीछे हटने की धमकी दे रहे थे। लेकिन वे इसके लिए तैयार नहीं थे, तो अगली गवाही के ठीक एक दिन पहले उनकी हत्या कर दी गई।

उधर सारण जिले में एक हत्याकांड के गवाह गवाही से ठीक पहले हत्या कर दी गई। परिजनों का आरोप है कि उन्हें पहले जहर दिया गया और फिर उनके शव को नहर के किनारे फेंक दिया गया। साफ है कि हालिया घटनाएं न्याय प्रक्रिया को बाधित करने के प्रयास में की गई हैं। गवाह किसी भी मुकदमे की महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं। आरोपी को सजा होना काफी हद तक उसकी गवाही पर निर्भर करता है। गवाहों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जाती है, तो फिर गंभीर आपराधिक मामलों में इंसाफ की उम्मीद भी छोड़ देनी होगी। इसलिए हालिया हत्याओं में जवाबदेही प्रशासन और सरकार की बनती है। वरना, बिहार में "जंगल राज" के आरोप फिर संगीन होने लगेंगे।

समाचार विश्लेषण :

बीमार जर्मनी कैसे करेगा अपना इलाज

> महंगे तेल के कारण देश में महंगाई की दर ऊंची बनी हुई है। यूरोजोन में भी ब्याज दर ऊपर बरकरार है। ऊर्जा स्रोतों को किफायती रखने के चक्कर में जर्मन सरकार का बजट घाटा बढ़ता जा रहा है।

2007-08 की विश्वव्यापी मंदी के कुछ साल बाद जब आयरलैंड, पुर्तगाल, इटली, ग्रीस और स्पेन की हालत खस्ता हुई, तो यूरोपीय संघ ने अपने बीमार सदस्यों को सहारा दिया। यूरोप की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी ने इस दौरान सबसे ज्यादा भार अपने ऊपर लिया। अब ये देश काफी हद तक संभल चुके हैं। लेकिन बुरे वक्त में उन्हें सहारा देने वाला जर्मनी अब खुद आर्थिक रूप से बीमार पड़ चुका है। यूक्रेन युद्ध और उससे उपजे नए भूराजनैतिक समीकरण, जर्मन अर्थव्यवस्था पर इमरजेंसी ब्रेक लगा चुके हैं।

जर्मनी अपनी लॉन्ग टर्म प्लानिंग और उस पर अडिग रहने के लिए मशहूर है। शांतिकाल के दौरान यह प्लानिंग जर्मनी का सबसे मजबूत औजार बनती है, लेकिन परिस्थितियां अचानक बदल जाएं तो जर्मन सिस्टम हालात संभलने का इंतजार करता है। यूक्रेन युद्ध के बाद जर्मनी के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। युद्ध के कारण जर्मनी को अपनी सैन्य तैयारियों और यूक्रेन की मदद पर बहुत ज्यादा पैसा खर्च करना पड़ रहा है। अंतरराष्ट्रीय मांग में गिरावट के कारण उसके निर्यात में कमी आई है। सबसे बड़े कारोबारी साझेदार चीन और पश्चिम के बिगड़ते संबंध भी भविष्य की योजनाओं पर भारी पड़ रहे हैं। रूस पर लगे प्रतिबंधों के कारण जर्मन कारखानों को मिलने वाली सस्ती गैस बंद हो चुकी है। महंगे तेल के कारण देश में महंगाई की दर ऊंची बनी हुई है। यूरोजोन में भी ब्याज दर ऊपर बरकरार है। ऊर्जा स्रोतों को किफायती रखने के चक्कर में जर्मन सरकार का बजट घाटा बढ़ता जा रहा है। जर्मन अर्थव्यवस्था की जान कहे जाने वाले मध्यम स्तर के उद्योग, कर्मचारियों की कमी से जूझ रहे हैं। यानी जर्मन मशीन के कई पुर्जे एक साथ गड़बड़ा चुके हैं।

(शेष बॉलीवुड पेज पर)

उपाकर्म का मुख्य उद्देश्य वेद के बारे में मानवजाति को ज्ञान देने वाले अर्थात मानव के लिए सामने लेकर आने वाले ऋषि- मुनियों को धन्यवाद करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करना है। वर्तमान में ऋग्वेद मानने वाले ब्राह्मण सावन माह की पूर्णिमा के एक दिन पूर्व शुक्ल पक्ष चतुर्दशी के श्रवण नक्षत्र में इसे मनाते हैं। इसे ऋग्वेद उपाकर्म भी कहते है।

भारतीय संस्कृति का परिदर्शक ऋग्वेद उपाकर्म

■ अशोक 'प्रवुद्ध'

प्राचीन काल से शरीर, मन और इंद्रियों की पवित्रता का पुण्य पावन पर्व श्रावणी उपाकर्म श्रावण मास के श्रवण नक्षत्र व चंद्र के मिलन अर्थात पूर्णिमा की तिथि अथवा हस्त नक्षत्र में श्रावण पंचमी को मनाए जाने की वैदिक परिपाटी है। श्रावणी उपाकर्म में श्रावणी और उपाकर्म दो शब्द हैं। श्रावणी शब्द श्रु श्रवणे धातु से ल्युट् प्रत्यय पूर्वक छन्दसि (वेदार्थ) में स्त्री लिंग में श्रावणी शब्द सिद्ध होता है। जिसका अर्थ होता है- सुनाये (सुनाई) जाने वाली। अर्थात जिसमें आहुति अर्थात वेदों की वाणी को सुना जाये, वह श्रावणी कहलाती है। अर्थात जिसमें निरन्तर वेदों का श्रवण-श्रावण और स्वाध्याय व प्रवचन होता रहे, वह श्रावणी है। उपाकर्म शब्द उप+ आ+कर्म से बना है। उप अर्थात सामीप्यात, आ अर्थात समन्ताद, कर्म अर्थात यज्ञीय कर्माणि। अर्थात जिसमें ईश्वर और वेद के समीप ले जाने वाले यज्ञ कर्मादि श्रेष्ठ कार्य किये जायें, वह उपाकर्म कहाता है। पारस्कर गृह्यसूत्र 2/10/1-2 में उपाकर्म शब्द की व्याख्या करते हुए कहा गया है-

अध्ययनस्य उपाकर्म उपाकरणं वा।

-पारस्कर गृह्य सूत्र 2/10/1-2

अर्थात- यह समय स्वाध्याय का उपकरण था। उप अर्थात समीप +आकरण अर्थात ले आना। अर्थात जनता को ऋषि-मुनियों, समाज के विद्वानों के समीप ले आना। उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल से ही भारत में ऋषि- मुनि, वेद के विद्वान आचार्य, पुरोहित के समीप आकर उनके सत्य वचनों को सुनकर उनका सम्मान करने, उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को आत्मसात कर जीवन में उतारने की परंपरा रही है। वैदिक मत में विद्वानों के समीप बैठ उनके वचनों को सुनना, उन्हें आत्मसात करते हुए उनका सम्मान कर उन्हें यथेष्ट दान देना ही ऋषि तर्पण की संज्ञा से संज्ञायित है। उपाकर्म एक वैदिक अनुष्ठान है। उपाकर्म का अर्थ है-

29 अगस्त -ऋग्वेद उपाकर्म अनुष्ठान

प्रारम्भ, शुरुआत, किसी चीज का आरम्भ। यह दिन वेदाध्ययन अर्थात वेद पढ़ने- सीखने के कर्मकांडों के प्रारम्भ का दिन होता है। उपाकर्म वर्ष में एक बार श्रावण के महीने में श्रवण नक्षत्र व चंद्र के मिलन के अवसर पर आता है। तमिल और कुछ अन्य कैलेंडरों के अनुसार यह धनिष्ठा नक्षत्र के दिन आता है।

परमेश्वरोक्त ग्रंथ वेदों को मानने वाले विद्वान विशेषकर वर्तमान के ब्राह्मण समुदाय अलग -अलग तरीके से इसे मानते हैं, फिर भी इस पर्व पर की जाने वाली सभी क्रियाओं का यह मूल भाव विगत समय में मनुष्य से हुए ज्ञात-अज्ञात बुरे कर्म का प्रायश्चित करना और भविष्य में अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देना ही है। उपाकर्म का मुख्य उद्देश्य वेद के बारे में मानवजाति को ज्ञान देने वाले अर्थात मानव के लिए सामने लेकर आने वाले ऋषि- मुनियों को धन्यवाद करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करना है। वर्तमान में ऋग्वेद मानने वाले ब्राह्मण सावन माह की पूर्णिमा के एक दिन पूर्व शुक्ल पक्ष चतुर्दशी के श्रवण नक्षत्र में इसे मनाते हैं। इसे ऋग्वेद उपाकर्म भी कहते है।

यजुर्वेद मानने वाले ब्राह्मण इसे श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाते है। इसे यजुर्वेद उपाकर्म कहते है। इसके अगले दिन गायत्री जप कर संकल्प लिया जाता है। सामवेद को मानने वाले ब्राह्मण सावन माह की अमावस्या के दूसरे दिन अर्थात भाद्रपद की हस्त नक्षत्र को इसे मनाते है। इसे सामवेद उपाकर्म कहते है। उपाकर्म को उपनयनं एवं उपनायाना भी कहते है। इस वर्ष 2023 में ऋग्वेद उपाकर्म 29 अगस्त दिन मंगलवार, यजुर्वेद उपाकर्म 30 अगस्त दिन बुधवार, गायत्री जापं 31 अगस्त दिन बृहस्पतिवार को मनाई जाएगी। सामवेद उपाकर्म 16 सितंबर शनिवार को मनाई जाएगी।

वैदिक परंपरा में भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक पथ का परिदर्शक श्रावणी उपाकर्म नामक यह पर्व वेद स्वाध्याय पर्व के रूप में मनाया जाता है। प्राचीन काल से ही स्वाध्याय भारतीय संस्कृति का प्रधान अंग रहा है। इसलिए ब्रह्मचारियों को आचार्य के अधीन रहकर वेदाध्ययन करते रहने का आदेश दिया गया है-आचार्याधीनो वेदमधीष्व। उनके स्नातक हो जाने पर उनको गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने पर भी स्वाध्याय करने के लिए आदेश दिया गया है -

स्वाध्यायान्मा प्रमदः, स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ।

अर्थात- विद्याध्ययन कर चुकने के बाद भी स्वाध्याय करते रहना। वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने वालों को भी स्वाध्याय का आदेश दिया गया है- स्वाध्याये नित्य युक्तः स्यात्। अर्थात- सदा स्वाध्याय में युक्त रहे। संन्यासी को भी सब कुछ छोड़ देने, लेकिन वेद का स्वाध्याय नहीं छोड़ने का आदेश दिया गया है- संन्यसेत्सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्। इस प्रकार श्रावण माह में ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी, ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी को स्वाध्याय में लगने का आदेश है।

श्रावण उपाकर्म के इस दिन नया यज्ञोपवीत धारण करने की परंपरा है। यज्ञोपवीत में तीन धागे होते है। वे तीन ऋणों के प्रतीक हैं- ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण। इसका उद्देश्य मनुष्य को इन तीनों ऋणों का बोध कराना है। यज्ञोपवीत ज्ञान ग्रहण करने का बाह्य चिह्न है। इसीलिए इस समय जिन लोगों ने यज्ञोपवीत नहीं धारण किया हुआ है, उन्हें नया यज्ञोपवीत धारण कर इस बात का संकल्प करना चाहिए कि वे अज्ञान, अंधकार से बाहर निकलने का हरसंभव प्रयास करेंगे और ज्ञानवान होकर परिवार, समाज, राष्ट्र को प्रकाशित करेंगे। पूर्व से यज्ञोपवीत धारण कर चुके, कर रहे व्यक्तियों को पुराने यज्ञोपवीत को उतारकर नया धारण करना चाहिए। और इस बात का संकल्प करना चाहिए कि वह अपने जीवन में स्वाध्याय और यज्ञ को कभी नहीं छोड़ेंगे।

पौराणिक मान्यतानुसार भगवान बिष्णु ने श्रावण पूर्णिमा के दिन ही असुरों से वेदों के उद्धार के लिए हयग्रीव रूप में अवतार लिया था। हयग्रीव के इस अद्भुत अवतार में विष्णु का सिर घोड़े लेकिन धड़ अर्थात सम्पूर्ण शरीर मनुष्य का था। कथा के अनुसार असुरी शक्ति मधु और कैटभ ने वेद को भगवान ब्रह्मा से चुरा लिया था। इन असुरों से वेदों को बचाने के लिए भगवान विष्णु ने हयग्रीव अवतार लिया था। इसी दिन को ब्राह्मण उपाकर्म या अवनि अवित्तम के रूप में मनाते हैं। सावन महीने की पूर्णिमा के दिन कर्नाटक, आंध्रप्रदेश व उड़ीसा आदि दक्षिण के कुछ हिस्सों में उपाकर्म मनाया जाता है। कालांतर में आततायी मुगलों के आक्रमण से त्रस्त अवलाओं द्वारा अपनी रक्षा के लिए वीरों के हाथ में राखी बांधने की परिपाटी का प्रचार इस दिन हुआ। इसमें कोई भी अवला किसी पुरुष के हाथ में राखी बांधकर उसे जीवन भर के लिए अपना भाई बना लेती है, और फिर वह भाई उस बहन को जीवन भर उसकी सहायता व रक्षा करने का आश्वासन देता है।

संसार की सर्वाधिक प्राचीनतम वैदिक संस्कृति समस्त विश्व को वरणीय है। आज भी समस्त विश्व के द्वारा गुणगान किया जाने वाला सभ्यता- संस्कृति भारतीय वैदिक संस्कृति ही है। यह भारतीय अर्थात वैदिक संस्कृति पूर्णतः संस्कृत पर अवलंबित है। भारतीयों के संस्कृत से नाता तोड़ दिए जाने के कारण भारत माता रूपी यह वसुंधरा हमसे रूठी हुई है। संस्कृत के छोड़ देने से हमारी वैदिक संस्कृति छूट गई, हमारी सनातन सभ्यता छूट गई, हमारा सत्य ज्ञान विज्ञान छूट गया। हमारा गौरवपूर्ण इतिहास छूट गया। भारतीय संस्कृति की प्राण संस्कृत भाषा ईश्वर वाणी, वेद वाणी, देव वाणी और समस्त भाषाओं की जननी है। संस्कृत ही वह भाषा है, जिसकी पूर्णतः वैज्ञानिक और ईश्वर द्वारा प्रदत्त अपनी ध्वनि व देवनागरी लिपि है। संस्कृत के बिना भारत की संस्कृति अधूरी है।

मीरा चरित्र कथा सुनने उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरू। सीरवी समाज ट्रस्ट कर्नाटक बलेपेट वडेर के तत्वाधान में चातुर्मास विराजित संत रामप्रकाश महाराज ने कहा कि कलयुग में हम जैसे साधारण लोगों के लिए मीरा का चरित्र आदर्श चरित्र है। सतयुग त्रेता और द्वापर युग के भक्तों के साध्य युक्त चरित्रों का अनुकरण करना कठीन है,पर कलयुग में हरि नाम और भक्तंत मीराबाई जैसी महाभक्तों की भक्तिमय कथा के श्रवम से भगवत कृपा प्राप्त की जा रही है। इस अवसर पर उपाध्यक्ष अन्नाराम परिहारिया, राजूराम बर्फा, शेषाराम भायल, जगदीश चोयल, सांस्कृतिक कमेंटी के सदस्य वालाराम काग एवं एच.एस.आर लेआउट वडेर के अध्यक्ष फाऊलाल परिहारिया सचिव लक्ष्मणराम आगलेचा सहित समाज के अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का भावविभोर होकर श्रोतागण कर रहे हैं रसपान

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । शहर के गीता भवन मंदिर के पीछे सतमास मोहल्ला में श्री श्री 108 अवतारी दास महाराज श्री हिरदेश पाठक जी के सांध्यिय मे कथावाचक पं श्री गिरजा शंकर शास्त्री जम्होरा वाले द्वारा 25 अगस्त से 31 अगस्त 23 तक संगीतमय कथा का 41 वां आयोजन किया जा रहा है ,जिसमें हजारों लोग कथा का रसपान कर रहे हैं।कथा उपरांत प्रसाद वितरण किया जाता है।दिनांक 1 सितंबर 23 शुक्रवार को भुजरियां - भैरो क्रिया विसर्जन गौरी सरोवर पर किया जाएगा, दिनांक 2 सितंबर 23 शनिवार को हवन पूर्णाहुति एवं संत भंडारा एवं प्रसाद वितरण किया जाएगा। श्री श्री 108 अवतारी दास महाराज श्री हिरदेश पाठक जी एवं कथावाचक पं गिरजाशंकर शास्त्री द्वारा पत्रकारो का सम्मान किया गया।

कलेक्टर ने किया मझगवां क्षेत्र का भ्रमण

पुष्पांजलि टुडे
राजेश कुमार तिवारी

सतना। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के मझगवां के संभावित दौरा कार्यक्रम के मद्देनजर कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा द्वारा मंगलवार को जिले के विकासखण्ड मझगवां क्षेत्र का भ्रमण कर यहां बनाये जा रहे हेलीपैड और कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. परीक्षित झाड़े सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

खेल के क्षेत्र में मेजर ध्यानचंद्र के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता: सिद्धार्थ श्रीवास्तव

दैनिक पुष्पांजली टुडे रीवा
विवेक तिवारी (संभागीय ब्यूरो)

रीवा। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद्र की 118वीं जयंती एवं राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर स्थानीय मार्तण्ड स्कूल में जिला स्तरीय बेसबॉल प्रतियोगिता का आयोजन सम्पन्न हुआ! जिसके मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी, कवि एवं वक्ता सिद्धार्थ श्रीवास्तव रहे, जबकि अध्यक्षता विकास खंड शिक्षा अधिकारी आर. एल. दीपांकर ने की! विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला क्रीड़ा अधिकारी रमेश सिंह, सहायक संचालक खेल जे. डी. रीवा किरण अवस्थी, युवा समाजसेवी अविराज एवं वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक शिष्ट धर शर्मा उपस्थित रहे! कार्यक्रम का संचालन शिक्षक डॉ विनय दुबे ने किया! सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथियों द्वारा हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद्र की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया! तत्पश्चात खिलाड़ियों से अतिथियों ने मैत्री भेंट की! इसके पश्चात जिला स्तरीय बेसबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया! बालक वर्ग में यह मैच विश्विद्यालय बनाम मार्तण्ड क्र 1 के बीच खेला गया! जिसकी विजेता विश्विद्यालय की टीम रही! इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी सिद्धार्थ श्रीवास्तव ने कहा कि- जिस प्रकार से देश में 1950 से वर्तमान तक राष्ट्रपति के पद को कई लोगों ने सुशोभित किया किंतु शिक्षक दिवस के कारण सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती समूचा देश मनाता है ठीक इसी प्रकार इस देश में विभिन्न खेलों में कई प्रतिभावान खिलाड़ी हुए जिन्होंने देश का नाम पूरे विश्व में रोशन किया लेकिन उनमें एकमात्र ध्यानचंद्र ऐसे हुए जिनकी जयंती को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है! उन्होंने भारत को ओलंपिक में तीन बार गोल्ड मैडल दिलवाया! वास्तव में खेल के क्षेत्र में मेजर ध्यानचंद्र के योगदान को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विकास खंड शिक्षा अधिकारी आर. एल. दीपांकर ने कहा कि- ÷जितने युवा खिलाड़ी इस मैच को खेल रहे है वो सब सही मायने में राष्ट्रीय खेल दिवस को चरितार्थ कर रहे है! आपमें टीम भावना जरूर होनी चाहिए तभी आपके खेल और व्यक्तित्व में निखार आएगा। कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे! इस अवसर पर प्रमुख रूप से विकासखंड अधिकारी रायपुर जीवेन्द्र सिंह, चंदन सिंह, अवधेश पांडेय, वीरेंद्र शुक्ला, सत्यम मिश्रा, अभिषेक सिंह, शिवम मिश्रा, शशिमोल तिवारी, सृष्टि मिश्रा एवं शिवानी भारती सहित बड़ी संख्या में खिलाड़ी एवं खेलप्रेमी उपस्थित रहे।

रीवा पुलिस लाइन में तैनात एक दर्जन से ज्यादा निरीक्षकों, उपनिरीक्षकों को सौंपी गई थानों की जिम्मेदारी

दैनिक पुष्पांजली टुडे रीवा
विवेक तिवारी (संभागीय ब्यूरो)

रीवा पुलिस अधीक्षक ने पुलिस लाइन में पदस्थ लगभग एक दर्जन से अधिक इंस्पेक्टरों को थानों की कमान सौपी है, तो वही दसियो से अधिक प्रधान आरक्षक और आरक्षकों को भी इधर उधर किया गया है। पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने विधानसभा चुनाव 2023 के हिसाब से निरीक्षकों की जमावट कर दी है। यहां 28 अगस्त की शाम एक माह से पुलिस लाइन में तैनात एक दर्जन से ज्यादा इंस्पेक्टरों को थानों की जिम्मेदारी सौंपी है। जारी आदेश में 16 निरीक्षक और दो उपनिरीक्षकों को नवीन थानों में पदस्थापना दी गई है। नए आदेश के बाद निरीक्षक सहदेव राम साहू को सिटी कोतवाली, निरीक्षक संतोष कुमार पंद्रे को सिविल लाइन और निरीक्षक विजय सिंह बघेल को विश्वविद्यालय थाने का प्रभारी बनाया है। वहीं देहात के थाने में तैनात सब इंस्पेक्टरों से बागडोर छीनकर निरीक्षकों को दी है, जिससे आगामी विधानसभा चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न कराया जा सके।

तीन एएसआइ, 9 प्रधान आरक्षक, 20 आरक्षक प्रभावित-एसपी ने एक दूसरे आदेश में तीन एएसआइ, 9 प्रधान आरक्षक, 20 आरक्षकों को इधर से उधर किया है। ऐसे में गड़ थाने के लालगांव चौकी में तैनात एएसआइ रामप्रकाश बागरी को सिविल लाइन बुलाया है। वहीं एएसआइ नारायण पाण्डेय को मनगवां से पुलिस लाइन भेजा है। इसी तरह माने खान को जवा से पुलिस लाइन तैनात किया है।

सौरव सोनी रहे चर्चा में, तत्काल सिरमौर रवानगी के आदेश जारी-तीसरे आदेश में एसपी ने रीवा शहर के सिटी कोतवाली थाने में तैनात उप निरीक्षक सौरव सोनी को तत्काल प्रभाव से सिरमौर भेजा है। पत्र के माध्यम से कहा कि तुरंत कोतवाली थाने से रवानगी दी जाए। साथ तुरंत सिरमौर थाने में आमद दे। आदेश की कापी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, रक्षित निरीक्षक, थाना प्रभारी कोतवाली को भेजी है।

कौन कहा किये गए पदस्थ-पुलिस अधीक्षक कार्यालय से जारी हुई स्थानांतरण के बाद पदस्थापना सूची बहुत ही आई लव यू को नई जिम्मेदारी सौंपी गई है जिन्हें नई जिम्मेदारी दी गई है उनमे निरीक्षक सहदेव राम साहू पुलिस लाइन से सिटी कोतवाली, निरीक्षक संतोष कुमार पंद्रे पुलिस लाइन से सिविल लाइन,निरीक्षक विजय सिंह बघेल पुलिस लाइन से विश्वविद्यालय,निरीक्षक रूप लाल उईके पुलिस लाइन से रायपुर कचुंलियान, निरीक्षक विकास कपीस पुलिस लाइन से गुड़, निरीक्षक प्रकाश चन्द्र पटेल पुलिस लाइन से गोविंदगड़,निरीक्षक निशा मिश्रा महिला थाना से सेमरिया,निरीक्षक श्रृंगेश सिंह राजपूत पुलिस लाइन से बैकुंठपुर, निरीक्षक अनूप कुमार उईके पुलिस लाइन से मनगवां,निरीक्षक जानकी प्रसाद ठाकुर पुलिस लाइन से गड़, निरीक्षक अजय खोब्रागडे पुलिस लाइन से जवा, निरीक्षक उषा सिंह सोमवंशी पुलिस लाइन से चाकघाट,निरीक्षक भूमेश्वरी चौहान पुलिस लाइन से महिला थाना, निरीक्षक हरीशंकर तिवारी पुलिस लाइन से यातायात, निरीक्षक लोकमन अहिरवार पुलिस लाइन से अजाक, निरीक्षक हितेन्द्रनाथ शर्मा सिविल लाइन से पुलिस लाइन,उपनिरीक्षक महेन्द्र सिंह पनवार से थाना प्रभारी डभौरा, उपनिरीक्षक आरएस बागरी चोरहटा से थाना प्रभारी पनवार शामिल है ।

थाना प्रभारी जो पहले से पदस्थ-बताते चलें कि जिले में सिरमौर थाने में निरीक्षक तेजभान सिंह, सोहागी थाने में निरीक्षक गोकुलानंद पाण्डेय, चोरहटा थाने में निरीक्षक अवनीश पाण्डेय, समान थाने में निरीक्षक जेपी पटेल, बिछिया थाने में प्रशिक्षु आइपीएस अंकित सोनी,अमहिया थाने में उपनिरीक्षक अरविंद सिंह राठौर,सगरा थाने में उपनिरीक्षक मनीषा उपाध्याय, जनेह थाने में उपनिरीक्षक अनुराग अवस्थी, अतरैला थाने में उपनिरीक्षक अभिषेक खरे पहले से पदस्थ हैं जिसे यथावत रखा गया है।

रीवा शहर की जनता को 2 साल के अंदर ही मिलने लगेगा स्वच्छ पीने लायक मीठा पानी नगर निगम महापौर अजय मिश्रा बाबा ने दी जानकारी

दैनिक पुष्पांजली टुडे रीवा

रीवा। शहर की जनता गंदा नाली का बदबूदार पानी पीने के लिए अभी भी मजबूर है जिसको लेकर नगर निगम कांग्रेस पार्टी के महापौर अजय मिश्रा बाबा ने नगर निगम का चुनाव लड़ने से पहले ही जनता से यह वादा किया था कि मैं महापौर बनने के बाद शहर को चार घंटे तक स्वच्छ पानी पीने लायक दूंगा मगर भाजपा की मध्य प्रदेश में सरकार और बीजेपी के स्पीकर हैं जिसके चलते विकास कार्यों के लिए पैसे नहीं मिल पा रहे हैं। प्रदेश में लगातार भाजपा की सरकार और रीवा में लगातार भाजपा के विधायक होने के चलते रीवा शहर के लोगों को आज तक स्वच्छ मीठा पानी पीने के लिए नहीं मिल पाया नगर निगम महापौर अजय मिश्रा बाबा ने रीवा की जनता से वादा किया है कि मैं एक-एक घर में नगर निगम के सभी क्षेत्रों में स्वच्छ पीने के लिए साफ सुथरा पानी पहुंचाऊंगा और यह पानी लगातार चार घंटे तक चलेगा पिछली दो निर्माण कंपनियों को कम दे दिया गया है इसी महीने हीं निर्माण एजेंसी को फिल्टर प्लांट का टेंडर देना है इसके बाद रीवा शहर के लोगों को जल्द ही शुद्ध पीने के लिए मीठा पानी दिया जाएगा कहीं ना कहीं कांग्रेस नगर निगम महापौर अजय मिश्रा बाबा ने अपने वचन पत्र पर खड़ा साबित हुए हैं उनके द्वारा जनता से जो जो वादे किए गए थे उन्हें एक-एक करके पूरे किए जा रहे हैं।

सांसद चौधरी की अगुवाई में हजारों बच्चों ने लिया भाग

पुष्पाजंली टुडे

पाली। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री पीपी चौधरी द्वारा तखतगढ़ और सुमेरपुर में सांसद खेल महाकुम्भ का आयोजन किया गया। इस आयोजन में क्षेत्र की सरकारी एवं गैर सरकारी स्कूलों के हजारों बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। आयोजन में विभिन्न खेलों का आयोजन हुआ, जिसमें बच्चों ने अपने

राष्ट्रीय खेल दिवस पर सांसद खेल महाकुम्भ का आयोजन

खेल कौशल का लाजवाब प्रदर्शन किया। इस मौके पर सांसद चौधरी ने बच्चों को उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि वे खेल और खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने और उन्हें एक प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रयासरत हूं। हमारे ग्रामीण और पंचायत स्तर पर बहुत सी अनूठी प्रतिभाएं मौजूद हैं, जिन्हें बस ढूंढकर सामने लाने के लिए एक मंच की जरूरत है और सांसद खेल महाकुंभ इसी दिशा में एक अनुपम प्रयास है। भारत सरकार और प्रधानमंत्री मोदी ने सुनिश्चित किया है कि खिलाड़ियों को बेहतरीन मंच मिले, वो खेलों को कॅरिअर के तौर पर देखें। खेलो इंडिया और फिट इंडिया जैसी पहल के माध्यम से युवा प्रतिभा का पोषण करना। इसके अलावा अब हर जिले खेलो इंडिया के विश्व स्तरीय खेल सेंटरस की घोषणा भी मोदी सरकार ने की है। जहाँ हर जिले के प्रतिभाशाली खिलाडी के हुनर को और तराशा जाएगा। सांसद चौधरी ने कहा कि वे आज राष्ट्रीय खेल दिवस पर, सभी खिलाड़ियों को सलाम करते है, जो अपने जुनून और कड़ी मेहनत से भारत को गौरवान्वित कर

रहे हैं। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद को उनकी जयंती के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मेजर ध्यानचंद खेल की अभूतपूर्व किंवदंती थे, जिन्होंने तीन ओलंपिक स्वर्ण पदक जीते और अपनी जादुई तकनीक से लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनकी प्रतिभा, उपलब्धियां और जनमानस कि भावना की कद्र करते हुए खेल रत्न पुरुस्कार को मेजर ध्यानचंद के नाम किया। इससे सरकार का खिलाड़ियों के प्रति सजग भाव झलकता है। युवा पीड़ी पर निर्भर विकसित भारत- सांसद चौधरी ने राउमावि सुमेरपुर में आयोजित भारतीय संविधान और आत्मनिर्भर भारत के मातृभूमि के प्रति समर्पण आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। सांसद ने कहा कि हम सभी जानते है कि प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हे सच्ची श्रद्धांजलि देते हुए और भारतीय विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने लोकतंत्र के मंदिर में चलने विधायी कार्यो के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा के कार्यो की जानकारी देकर उनके कार्य विभाजन को बड़ी बारीकी से समझाया। सांसद चौधरी ने कहा कि भारत का संविधान एक परिसंघ संविधान है जिसके अंतर्गत संघ और राज्यों के लिए अलग-अलग व्यवस्था दी गई है। परिसंघ संविधान के लिए सबसे आवश्यक बात यह है कि संघ और राज्यों के बीच शक्तियों का बंटवारा निश्चित होना चाहिए जिससे दोनों के बीच टकराव की स्थिति का जन्म नहीं हो। प्रत्येक देश की स्थानीय और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार शक्ति विभाजन भी भिन्न-भिन्न होता है। भारत सरकार अधिनियम 1935 में भी 3 अनुसूचियों का समावेश किया गया था। संघ सूची राज्य सूची समवर्ती सूची भारत के संविधान में उक्त अधिनियम की प्रणाली का अनुसरण किया गया और राज्यों को तीन सूची में विभाजित किया गया। उन्होंने संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची के साथ ही लोकसभा एवं राज्यसभा की विभिन्न समितियों के बारे में बच्चों को ज्ञानवर्धक जानकारी दी। सांसद चौधरी ने बच्चों को आत्मनिर्भर भारत अभियान से जुड़ने कहा आह्वान करते हुए भारत की मौजूदा वैश्विक स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह इस बात को द्योतक है कि हमारा भारत अब आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक लंबी छलांग लगा चुका है। आज हर क्षेत्र में हमारा भारत अपने यहां बनी सामग्री का इस्तेमाल करता है। पहले कई देशों से हमें वस्तुओं को आयात करना पड़ता था। लेकिन आज स्थिति ऐसी बदली है कि हम कई देशों को निर्यात कर रहे हैं। सांसद चौधरी ने बच्चों से प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिए गए पंच प्रण को अपनाने को होगा। इसमें देश को विकसित भारत के बड़ाने में हर देशवासी की भूमिका, विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता वाली गुलामी की मानसिकता, देश की विरासत और संस्कृति पर गर्व करना, एकता और देश के प्रति हमारे कर्तव्यों का निर्वहन करना। इन सभी प्रणों को पालन से हमारी युवा पीढ़ी को अगले 25 वर्षों में हम 26 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था दे पाएंगे। 2047 में, जब हम स्वतंत्रता के 100 वर्ष मनाएंगे, भारत के पास दुनिया का सबसे युवा और सबसे कुशल कार्यबल होगा। पांच संकल्प तेजी से आर्थिक विकास सुनिश्चित करेंगे और निरंतर विकास लिए पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर भारत का संकल्प साकार होगा। व्याख्यान के बाद सांसद खेल महाकुम्भ के तहत विभिन्न मैत्री खेलों का आयोजन हुआ, जिसमें क्षेत्र की सभी स्कूलों के बच्चों ने बड़-चड़कर भाग लिया। सांसद चौधरी की ओर से सभी खिलाड़ियों को स्मृति चिन्ह के साथ निःशुल्क टी-शर्ट भी वितरित किए गए। इस दौरान सुमेरपुर विधायक जोराराम कुमावत, नगरपालिकाध्यक्ष सुमेरपुर उषा राठौड़, नगरपालिकाध्यक्ष तखतगढ़ ललित रांकावत, उपाध्यक्ष तखतगढ़ मनोज नामा, मण्डल अध्यक्ष महेन्द्र माली, लक्ष्मण घांची, रविकांत रावल, विजय मरूधर, सुरेश रावल, समस्त विद्यालयों के संस्था प्रधान, स्टॉफगण, स्कूली बच्चे सहित स्थानीय जनप्रतिनिधिगण और बड़ी संख्या में आमजन की भागीदारी रही।

सार समाचार

क्रिकेट में पहली बार रेड कार्ड का इस्तेमाल

बेसेटेरे,आईएएनएस। अनुभवी ऑफ स्पिनर सुनील नरेन अपनी टीम ट्रिनबागो नाइट राइडर्स के लिए सीपीएल मैच में ओवर-रेट उल्लंघन के लिए लाल कार्ड दिखाए जाने वाले पहले क्रिकेटर बन गए। क्रिकेट में रेड कार्ड! जी, हां आपने सही पढ़ा... क्रिकेट में स्लो ओवर रेट की वजह से पहली बार रेड कार्ड दिखाया गया। यह कार्ड सीपीएल टी-20 लीग में आया। सीपीएल-2023 में आयोजकों ने धीमी ओवर गति से निपटने के लिए नए नियम लागू किए, जिसके कारण खेल बहुत देर से समाप्त हुए। इसमें कहा गया है,अगर कोई फील्डिंग टीम अपना 18वां ओवर निर्धारित समय से ज्यादा देर तक शुरू करती है तो उन्हें तीस गज के घेरे के अंदर एक अतिरिक्त फील्डर लाना होगा। राइडर्स ने आखिरी तीन ओवर्स में स्लो बॉलिंग की थी और टीम जरूरी ओवर रेट से पीछे थी। इस वजह से अंपायर ने टीम को 19वें ओवर के बाद रेड कार्ड दिखाया। राइडर्स के कप्तान पोलार्ड ने स्पिनर सुनील नरेन को आखिरी ओवर में मैदान से बाहर भेज दिया। आखिरी ओवर में टीम ने 10 खिलाड़ियों के साथ ही फील्डिंग की। इस तरह नरेन क्रिकेट में रेड कॉर्ड मिलने वाले पहले खिलाड़ी बने।

केइ निशिकोरी ने अमेरिकी ओपन से नाम वापिस लिया

न्यूयॉर्क । अमेरिकी ओपन 2014 के उपविजेता केइ निशिकोरी ने इस साल बायें घुटने की चोट के कारण टूर्नामेंट से नाम वापिस ले लिया है। पुरूष एकल वर्ग में उनकी जगह क्वालीफायर में हारने वाले जेम्स डकवर्थ ने ली है। डकवर्थ का सामना मंगलवार को पहले दौर में फेलिप मेलिजेनी अल्वेस से होगा। जापान के 33 वर्ष के निशिकोरी का जनवरी 2022 में कूल्हे का आपरेशन हुआ था। उन्होंने जुलाई में टेनिस कोर्ट पर वापसी की लेकिन बायें घुटने में दिक्कत के कारण उसके बाद नहीं खेल सके।

विलियमसन के वर्ल्ड कप खेलने पर सस्पेंस

डरहम, । वर्ल्ड कप से पहले न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम अपने कप्तान केन विलियमसन को भरपूर समय देना चाहती है। टीम ने विलियमसन को फिटनेस साबित करने के लिए दो सप्ताह का और समय दिया है। भारत में खेले जाने वाले वनडे वर्ल्ड कप-2023 की शुरुआत 5 अक्टूबर से होगी। इसके लिए सभी टीमों को 5 सितंबर तक अपनी प्रारंभिक टीम का ऐलान करना होगा। ऐसे में न्यूजीलैंड की टीम अपने कप्तान केन विलियमसन को लेकर काफी परेशान है, जो इस साल आईपीएल में लगी चोट के कारण काफी समय से खेल से दूर हैं और अब भी पूरी तरह फिट नहीं हुए हैं।

हॉकी हौंसला रखे, ज्यादा इतराहट घातक!

नई दिल्ली ■

एशियन चैंपियंस ट्राफी जीत कर भारतीय हॉकी टीम के हौंसले कुछ ज्यादा ही बुलंद हैं। टीम प्रबंधन और खिलाड़ियों की बयानबाजी से यह संकेत मिलता है कि भारतीय हॉकी अब सही दिशा में बढ़ रही है। लेकिन एक बड़ी परीक्षा अभी होनी बाकी है। चीन में होने वाले एशियाई खेलों में यदि भारत खिताब जीतता है तो 2024के ओलंपिक खेलों में सीधा प्रवेश मिल जाएगा। भारतीय टीम के कोच, खिलाड़ी और भारतीय हॉकी प्रेमियों को भरोसा है कि हमारी टीम आसानी से एशियाई खेलों में चैंपियन बन जाएगी।

सही मायने में मुकाबला उन्हीं देशों से है, जोकि एशियन चैंपियनशिप में खेल चुकी हैं। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि एशियाई खेलों में हमें चीन के मैदानों और उसके दर्शकों के सामने खेलना है। जाहिर है माहौल अनुकूल कदापि नहीं होने वाला। चीन में भारतीय टीम को समर्थन कदापि नहीं मिलेगा। हां, यदि भारतीय खिलाड़ी अपना श्रेष्ठ दे पाए तो मेजबान चीन, जापान, पाकिस्तान, मलेशिया, कोरिया आदि टीमों को हरा सकते हैं। यह सही है कि पाकिस्तान हमेशा से हमारा परंपरागत प्रतिद्वंद्वी बना हुआ है।

हाल फिलहाल इस प्रकार की सोच हास्यास्पद नजर आती है। कारण, आज पाकिस्तान के पास पहले जैसे सितारा खिलाड़ी नहीं हैं। पाकिस्तान को चार गोलों से हराने पर हमारे खिलाड़ियों का बड़बोलापन इसलिए मायने नहीं रखता क्योंकि पाकिस्तान नए सिरे से नए खिलाड़ियों के साथ पांव जमाने की कोशिश कर रहा है। हमारे खिलाड़ी पांच तारा सुविधाओं का भोग कर रहे हैं जबकि पाकिस्तान में हॉकी अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। फिरभी नए और युवा खिलाड़ियों की टीम बड़ा उलटफेर कर सकती है। बेमतलब डींग हांकने वाले भारतीय हॉकी के आका यह ना भूलें कि साल की शुरुआत में भुवनेश्वर विश्व कप में भारत अपने घर पर नौवें स्थान पर रहा था। उस शर्मनाक प्रदर्शन को दिल दिमाग में ताजा रखना बेहतर रहेगा। यह भी याद रखें कि विश्व विजेता (1975) बने 48साल बीत गए हैं और ओलंपिक चैंपियन 43 साल पहले बने थे।

अगले दो महीने में इस टीम के साथ यादें बनाना चाहता हूं: रोहित

नई दिल्ली ■

रोहित शर्मा स्वदेश में होने वाले विश्व कप से जुड़े भारी दबाव को समझते हैं लेकिन भारतीय कप्तान खुद को बाहरी बातों से दूर रखना चाहते हैं क्योंकि वह एक दशक में देश के लिए पहली आईसीसी ट्रॉफी जीतने की कठिन यात्रा पर निकल रहे हैं। भारत के 36 वर्षीय कप्तान के कंधों पर एक अरब से अधिक लोगों की उम्मीदों का बोझ है और उन्हें पता है कि पांच अक्टूबर को अहमदाबाद में इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच मुकाबले के साथ शुरू हो रहे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय विश्व कप में क्या दांव पर लगा है।

बेंगलुरू में एशिया कप के शिविर से जुड़ने से पहले रोहित ने पीटीआई को दिए विशेष साक्षात्कार में कहा, मेरे लिए यह महत्वपूर्ण है कि मैं खुद को सहज रखूं और उन बाहरी तत्वों के बारे में चिंता नहीं करूं जो सकारात्मक या नकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा,मैं उस चरण में जाना चाहता हूं जिसमें मैं 2019 विश्व कप से पहले था। पिछले टूर्नामेंट में अभूतपूर्व पांच शतक के साथ 648 रन बनाकर शीर्ष स्कोरर रहे रोहित ने कहा,मैं मानसिक रूप से काफी अच्छी स्थिति में था और टूर्नामेंट के लिए काफी अच्छी तैयारी की थी। उन्होंने कहा,मैं अच्छी लय, मानसिकता में था। मैं इसे वापस लाना चाहता हूं और मेरे पास ऐसा करने के लिए समय है।

नीरज चोपड़ा ने फिर रचा इतिहास

विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण जीतने वाले पहले भारतीय बने।

बुडापेस्ट ■

ओलंपिक चैम्पियन नीरज चोपड़ा ने एक बार फिर इतिहास रच दिया और विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय बन गए। उन्होंने पुरूषों की भालाफेंक स्पर्धा में 88.17 मीटर के थ्रो के साथ यह उपलब्धि हासिल की। भालाफेंक फाइनल में भारत का इस कदर दबदबा था कि शीर्ष छह में तीन भारत के खिलाड़ी थे और ऐसा विश्व चैम्पियनशिप में पहली बार हुआ है कि शीर्ष आठ में तीन भारतीय रहे हों।

किशोर जेना रविवार की देर रात हुए फाइनल में पांचवें स्थान पर रहे जिन्होंने अपना व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 84.77 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो फेंका। वहीं डी पी मनु छठे स्थान पर रहे जिनका सर्वश्रेष्ठ थ्रो 84.14 मीटर का था। 25 वर्ष के चोपड़ा ने पहला प्रयास फाउल रहने के बाद दूसरे में सर्वश्रेष्ठ थ्रो फेंका। इसके बाद उन्होंने 86.32 मीटर, 84.64 मीटर, 87.73 मीटर और 83.98 मीटर के थ्रो फेंके। पाकिस्तान के अरशद नदीम ने 87.82 मीटर के सत्र के अपने सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ रजत और चेक गणराज्य के याकूब वालेश ने कांस्य पदक जीता जिनका सर्वश्रेष्ठ थ्रो 86.67 मीटर का था। चोपड़ा ने फाउल के साथ शुरू किया लेकिन दूसरे प्रयास में बढत बनाई जो अंत तक कायम रही। पाकिस्तान के नदीम भी तीसरे दौर के बाद दूसरे स्थान पर आ गए और आखिर में पहले दो स्थान इन्हीं दोनों को मिले। निशानेबाज अभिनव बिंद्रा के बाद एक ही समय पर ओलंपिक और विश्व चैम्पियनशिप जीतने वाले चोपड़ा दूसरे भारतीय बन गए। बिंद्रा ने 23 वर्ष की उम्र में विश्व चैम्पियनशिप और 25 वर्ष की उम्र में ओलंपिक स्वर्ण जीता था।

टोक्यो में 2021 ओलंपिक में एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीतने वाले चोपड़ा पहले भारतीय बने। उन्होंने 2022 में यूजीन में विश्व चैम्पियनशिप में रजत पदक जीता था। उनसे पहले लंबी कूद में अंजू बॉबी जॉर्ज ने 2003 में पेरिस विश्व चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता था। एक ही समय पर ओलंपिक और विश्व खिताब जीतने वाले वह तीसरे भालाफेंक खिलाड़ी बन गए।

उनसे पहले चेक गणराज्य के जान जेलेज्नी और नॉर्वे के आंद्रियास टी यह कारनामा कर चुके हैं। जेलेज्नी ने 1992, 1996 और 2000 में ओलंपिक खिताब जीते जबकि 1993, 1995 और 2001 में विश्व चैम्पियनशिप जीती थी। आंद्रियास ने 2008 ओलंपिक और 2009 विश्व चैम्पियनशिप जीते थे।

अब चोपड़ा के नाम खेल के सारे खिताब हो गए हैं। उन्होंने एशियाई खेल (2018), राष्ट्रमंडल खेल (2018) स्वर्ण के अलावा चार डायमंड लीग खिताब और पिछले साल डायमंड लीग चैम्पियन ट्रॉफी जीती। वह 2016 में जूनियर विश्व चैम्पियन रहे और 2017 में एशियाई चैम्पियनशिप खिताब जीता। इस बीच एशियाई रिकॉर्ड तोड़ते हुए पहली बार फाइनल के लिए क्वालीफाई करने वाली भारत की पुरुष चार गुणा 400 मीटर रिले टीम फाइनल में पांचवें स्थान पर रही।

भारत के मोहम्मद अनस याहिया, अमोज जेकब, मोहम्मद अजमल वारियाथोडी और राजेश रमेश की चौकड़ी ने फाइनल में दो मिनट 59 . 92 सेकंड का समय निकाला। पारूल चौधरी ने नौ मिनट 15.31 सेकंड का राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया लेकिन महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेस में 11वें स्थान पर रही। इससे पहले रिकॉर्ड ललिता बाबर (9 :19.76) के नाम था जो 2015 विश्व चैम्पियनशिप में आठवें स्थान पर रही थी। चैम्पियनशिप के आखिरी दिन चोपड़ा के स्वर्ण ने भारतीय खेमे में खुशी की लहर भर दी। चोपड़ा, जेना, मनु, पारूल, पुरूषों की चार गुणा 400 मीटर रिले टीम और जेस्विन एल्ड्रिन (लंबी कूद फाइनल में 11वां स्थान) के अलावा बाकी भारतीयों का प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

नये राष्ट्रीय रिकॉर्ड के साथ पारुल ने कटाया पेरिस का टिकट

बुडापेस्ट ■

भारत की पारुल चौधरी ने विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 के 3000 मीटर स्टीपलचेज़ फाइनल में नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए 2024 पेरिस ओलंपिक के लिये क्वालीफाई कर लिया है। पारुल रविवार को नेशनल एथलेटिक्स सेंटर में हुए फाइनल में 11वें स्थान पर रहीं, लेकिन उन्होंने नौ मिनट 15.31 सेकंड में दौड़ पूरी कर ललिता बाबर (नौ मिनट 19.76 सेकंड) का रियो ओलंपिक 2016 में बनाया गया सात साल पुराना राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ दिया।

पेरिस ओलंपिक क्वालीफिकेशन के लिये खिलाड़ियों को नौ मिनट 23 सेकंड में दौड़ पूरी करनी थी और अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के दम पर पारुल ने पेरिस का टिकट भी कटा लिया। इससे पूर्व, पारुल क्वालीफिकेशन राउंड में अपने पिछले व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ (9.29.51) से पांच सेकंड तेज दौड़ीं और इससे उन्हें पांचवें स्थान पर रहकर फाइनल में जगह बनाई थी। हाल के वर्षों में, अमेरिकी कोच निक सिमंस द्वारा निर्धारित कोचिंग कार्यक्रम से उन्हें काफी फायदा हुआ है। उन्होंने इस साल की शुरुआत में 5000 मीटर में नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया और इस साल एशियाई चैंपियनशिप में 3000 मीटर स्टीपलचेज़ में स्वर्ण पदक जीता था।

महिला हॉकी

भारतीय महिला हॉकी ने विश्व कप के लिए क्वालीफाई किया

सालालाह ■

कप्तान नवजोत कौर की हैट्रिक की बदौलत भारत ने यहां महिला एशियाई हॉकी 5 विश्व कप क्वालीफायर में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए मलेशिया को 9-5 से शिकस्त दी और टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाने के साथ अगले साल होने वाले विश्व कप के लिए भी क्वालीफाई करने में सफल रहा। नवजोत (सातवें, 10वें और 17वें मिनट) ने हैट्रिक लगायी जबकि मारियाना कुजुर (नौवें, 12वें मिनट) और ज्योति (21वें और 26वें मिनट) ने दो दो गोल दागे। वहीं मोनिक्का दिपी टोप्पो (22वें मिनट) और महिमा चौधरी (14वें मिनट) ने एक एक गोल किये।

मलेशिया के लिए जेती मोहम्मद (चौथे और पांचवें मिनट), डियान नजेरी (10वें और 20वें मिनट) और अजीज जाफिराह (16वें मिनट) में गोल किये। हॉकी फाइव्स विश्व कप का शुरुआती चरण अगले साल 24 से 27 जनवरी तक मस्कट में खेला जायेगा। भारत ने मेच में तेज शुरुआत की लेकिन मलेशिया ने जेती मोहम्मद के जरिये बढ़त बना ली। एक मिनट बाद इसी खिलाड़ी ने मैदानी गोल से इसे दोगुना कर दिया।

भारत ने दो मिनट बाद नवजोत के गोल से अंतर कम किया और फॉर्म में चल रही कुजुर ने फिर भारत को 2-2 से बराबरी दिलायी। दोनों टीमें लगातार हमले कर रही थीं, मलेशिया ने नाजेरी के जरिये बढ़त बनायी।

भारत ने तुरंत जवाबी हमले किये और तेजी से दो गोल कर स्कोर 4-3 कर दिया। नवजोत और कुजुर ने भारत के लिए गोल किये। पहले हाफ में एक मिनट का समय बचा था और महिमा चौधरी ने बढ़त 5-3 करने में मदद की। दूसरे हाफ में दोनों टीमें आक्रामक थीं और खतरनाक दिख रही थीं। मलेशिया ने मौके का फायदा उठाकर जाफिराह की बदौलत गोल कर अंतर कम किया।

पर इसके बाद भारत ने नवजोत, ज्योति और टोप्पो के गोल की मदद से 8-5 की बढ़त बना ली थी।

गंडास प्राग में 60वें स्थान पर रहे

प्राग । भारतीय गोल्फर मनु गंडास ने बोगीरहित चार अंडर 68 का स्कोर करके डी प्लस डी रीयल चेक मास्टर्स गोल्फ में 60वां स्थान हासिल किया। पिछले सत्र में इंडियन पीजीटीआई टूर आर्डर आफ मेरिट जीतकर डीपी विश्व टूर के लिये क्वालीफाई करने वाले गंडास अब 18 टूर्नामेंट खेलकर सात में कट में प्रवेश कर चुके हैं। वह आर्डर आफ मेरिटमें 179वें स्थान पर हैं। उन्हें 2024 में फुल कार्ड लेने के लिये शीर्ष 115 में रहना होगा। टॉड क्लीमेंट्स ने नौ अंडर 63 के स्कोर के साथ पहला डीपी विश्व टूर खिताब जीता ।

वर्ल्ड कप में खेलने के लिए बेताब हैं चोटिल तमीम इकबाल

ढाका ■

बाएं हाथ के अनुभवी सलामी बल्लेबाज तमीम इकबाल ने उम्मीद जताई है कि वो विश्व कप से पहले ठीक हो जाएंगे। इकबाल वर्तमान में पीठ की चोट के कारण पुनर्वास से गुजर रहे हैं।

एशिया कप के आगाज से पहले बांग्लादेश क्रिकेट टीम को सलामी बल्लेबाज तमीम इकबाल के रूप में एक बड़ा झटका लगा था, क्योंकि बल्लेबाज पीठ की चोट के कारण पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गया है। तमीम की इंजरी को ध्यान में रखते हुए बीसीबी ने उन्हें एशिया कप से आराम दिया है।

हालांकि, तमीम को पूरी उम्मीद है कि वह विश्व कप से पहले पूरी तरह फिट हो जाएंगे और भारत की यात्रा से पहले टीम के साथ जुड़ जाएंगे। तमीम ने कहा, सब अच्छा चल रहा है, जहां तक पुनर्वास का सवाल है।

समाचार-आसपास

मैक्सवेल द.अफ्रीका के खिलाफ टी-20 सीरीज से बाहर

डरबन । दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरीज की शुरुआत से पहले कंगारू टीम को बड़ा झटका लगा है। टखने में चोट के चलते ग्लेन मेक्सवेल टी-20 सीरीज से बाहर हो गए हैं। दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच तीन टी-20 मैचों की सीरीज का आगाज 30 अगस्त से होगा। इस बीच प्रशिक्षण सत्र के दौरान मेक्सवेल चोटिल हो गए और उन्हें सीरीज से बाहर होना पड़ा। मैक्सवेल के रिप्लेसमेंट के तौर पर टीम में मेथ्यू वेड की एंट्री हुई है। ऑस्ट्रेलियाई टीम को उम्मीद है कि मेक्सवेल वर्ल्ड कप से पहले पूरी तरह फिट होकर टीम में वापसी करेंगे। टोनी डोडेमाइड ने कहा कि मेक्सवेल के चोट के इतिहास को देखते हुए उनके साथ कोई जोखिम नहीं लिया जाएगा, जिसमें उनके पैर की गंभीर चोट भी शामिल है।

4X400 मीटर रिले में पांचवें स्थान पर रहा भारत

बुडापेस्ट । मोहम्मद अनस, अमोज जेकब, मोहम्मद अजमल और राजेश रमेश की भारतीय टीम ने विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 की 4 गुना 400 मीटर रिले दौड़ में पांचवां स्थान हासिल किया है। क्वालीफिकेशन राउंड में एशियाई रिकॉर्ड स्थापित करने वाली भारतीय टीम रविवार को फाइनल में दो मिनट 59.92 सेकंड के समय में दौड़ पूरी कर पांचवें स्थान पर रही। अमेरिका ने दो मिनट 57.31 सेकंड के समय के साथ स्वर्ण पदक हासिल किया, जबकि फ्रांस ने दो मिनट 58.45 सेकंड के समय के साथ चांदी हासिल की। ग्रेट ब्रिटेन (दो मिनट 58.71 सेकंड) ने कांस्य पदक हासिल किया। भारतीय टीम चौथे स्थान पर रहने वाले जमैका (2:59.34) से कुछ सेकंड ही पीछे रही। उल्लेखनीय है कि भारत ने शनिवार को हुए क्वालीफिकेशन राउंड में दो मिनट 59.05 सेकंड के समय में दौड़ पूरी कर नया एशियाई रिकॉर्ड स्थापित किया था।

भुल्लर सत्र के सर्वश्रेष्ठ पांचवें स्थान पर रहे

सेंट एंड्रयूज । भारतीय गोल्फर गगनजीत भुल्लर सत्र का सर्वश्रेष्ठ स्थान हासिल करते हुए शुरुआती सेंट एंड्रयूज बे चैम्पियनशिप में पांचवें नंबर पर रहे। भुल्लर तीसरे दौर के बाद संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर चल रहे थे। उन्होंने दो अंडर 70 का कार्ड खेला जिससे वह 17 अंडर के स्कोर पर रहे।

भारतीय खेलों के युगपुरूष बनने की राह पर नीरज चोपड़ाः अशोक ध्यानचंद

नई दिल्ली, । हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के विश्व कप विजेता बेटे अशोक ध्यानचंद का मानना है कि विश्व चैम्पियनशिप और ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले भालाफेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा भी उनके पिता की तरह भारतीय खेलों के 'युगपुरूष' बनने की राह पर हैं। भारतीय खेलों के इतिहास में महानतम खिलाड़ियों में मेजर ध्यानचंद का जिक्र सबसे पहले आता है जिन्होंने एम्सटर्डम (1928), लॉस एंजीलिस (1932) और बर्लिन (1936) ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीते और माना जाता है कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय हॉकी में एक हजार से अधिक गोल दागे। उनके जन्मदिन 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। तोक्यो ओलंपिक 2021 स्वर्ण पदक विजेता चोपड़ा विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए।

मलाइका ने ब्रेकअप की अफवाहों को किया खारिज

लंच डेट के लिए एक रेस्तरां में एक साथ देखे जाने के बाद, मलाइका अरोड़ा ने सोमवार को एक पोस्ट शेयर की, जिससे ऐसा लगता है कि वह एक्टर अर्जुन कपूर के साथ ब्रेक-अप की अफवाहों को खारिज कर रही हैं। इंस्टाग्राम स्टोरीज पर मलाइका ने अमेरिकी कॉमिक स्ट्रिप 'पीनट्स' के कार्टून कैरेक्टर स्नूपी की एक फोटो शेयर की और उस पर लिखा था : उन लोगों के करीब रहें जो सनसाइन की तरह महसूस करते हैं। रविवार को मलाइका और अर्जुन को एक साथ लंच डेट पर साथ देखा गया। दोनों को मुंबई के एक रेस्टोरेंट से बाहर घूमते हुए देखा गया। मलाइका ने वाइट आउटफिट पहनी हुई थी, वहीं अर्जुन ने ब्लैक टी-शर्ट और जींस लुक कैरी किया हुआ था।

खबरें थीं कि अर्जुन और मलाइका का ब्रेकअप हो गया है और अर्जुन अब सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और एक्टर कुशा कपिला को डेट कर रहे हैं। हालांकि, कुशा, जिनका हाल ही में जोरावर सिंह अहलूवालिया से ब्रेकअप हुआ है, ने ऐसी खबरों से इनकार किया। अर्जुन को डेट करने से पहले मलाइका की शादी बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के भाई और अभिनेता-निर्देशक अरबाज खान से हुई थी। 1998 में शादी करने के बाद, उन्होंने मार्च 2016 में अलग होने की घोषणा की और मई 2017 में आधिकारिक तौर पर तलाक हो गया।

'भूल भुलैया 3' में कुछ समय लगेगा: अनीस बज्मी

निर्देशक अनीस बज्मी की बतौर निर्देशक आखिरी फिल्म 'भूल भुलैया 2' दर्शकों को पसंद आई थी और अब उनके फैंस तीसरे पार्ट का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन निर्देशक ने कहा कि 'भूल भुलैया 3' बनाने में समय लगेगा, क्योंकि स्क्रिप्ट अभी भी लिखी जा रही है। अनीस बज्मी ने 'वेलकम', 'रेडी' और 'सिंह इज किंग' जैसी कई शानदार फिल्में दी हैं। निर्देशक अब नवाजुद्दीन सिद्दीकी की अगली फिल्म 'सेक्शन 108' पेश कर रहे हैं, जिसका टीजर हाल ही में मुंबई में जारी किया गया था। टीजर लॉन्च के मौके पर अनीस बज्मी ने नवाज के साथ काम करने और 'भूल भुलैया 3' के बारे में बात की। 'भूल भुलैया' फ्रेंचाइजी के तीसरे पार्ट का हर कोई बेसब्री से इंतजार कर रहा है।

सुष्मिता सेन मना रही बेटी अलीसा का जन्मदिन

एक्ट्रेस सुष्मिता सेन सोमवार को अपनी छोटी बेटी अलीसा का जन्मदिन सेलिब्रेट पर रही हैं। इस मौके पर उन्होंने कहा कि भगवान ने उसे कितना खास बनाया है और उन्हें उस पर बेहद गर्व है। फोटो-शेयरिंग प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर सुष्मिता ने एक वीडियो असेंबल शेयर किया, जिसमें वह अलीसा की पुरानी तस्वीरें दिख रही है। इसमें उनके बचपन की तस्वीरें, उनकी बड़ी बहन रेनी के साथ स्कूल की तस्वीरें, मां सुष्मिता के साथ जर्नी की तस्वीरें, उनके नाना-नानी की कुछ झलकियां, उनके पिछले वर्थडे सेलिब्रेशन की तस्वीरें और अन्य कैंडिड तस्वीरें हैं।

'गदर 2' सबसे ज्यादा कमाई करने वाली तीसरी हिंदी फिल्म

हाल ही में रिलीज हुई सनी देओल अभिनीत फिल्म 'गदर 2' धमाल मचा रही है और यह आमिर खान अभिनीत फिल्म 'दंगल' के लाइफटाइम कलेक्शन को पार करने के बाद अब तक की तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बन गई है। कमाई के मामले में इसने हाल ही में यश-स्टारर 'के.जी.एफ.: चैप्टर 2' को पीछे छोड़ दिया है। ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श 'गदर 2' के कलेक्शन में हुई प्रगति को रविवार को अपने एक्स (जिसे पहले एक्स कहा जाता था) पर साझा किया।

फिल्म ने भारत में अब तक 439.95 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। उन्होंने लिखा,'केजीएफ 2' को पार किया, अगली 'बाहुबली 2'... दंगल के लाइफटाइम बिजनेस को पार करने के बाद, गदर2 ने केजीएफ2 हिंदी को पछाड़ दिया... गदर2 अब भारत में तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म है... लगातार धूम मचा रही है बड़े क्षेत्रों में बीओ रिकॉर्ड... [सप्ताह 3] शुक्रवार 7.10 करोड़, शनिवार 13.75 करोड़। कुल : 439.95 करोड़। इंडिया विज (एसआईसी)। फिल्म प्रदर्शक और वितरक, व्हाइटलियन एंटरटेनमेंट के सीईओ, सनी खन्ना ने पहले आईएएनएस को बताया था, "फिल्म की सप्ताहांत पर सिनेमाघरों में औसतन 75-80 प्रतिशत ऑक्यूपेंसी दर है। इस फिल्म ने उन सिनेमाघरों में जान डाल दी है जो बंद होने की सोच रहे थे। मल्टीप्लेक्स की राष्ट्रीय श्रृंखला को छोड़ दें, यहां तक कि छोटे मल्टीप्लेक्स जिनकी ऑक्यूपेंसी दर पहले 8 प्रतिशत थी, अब 60% ऑक्यूपेंसी दर देखी जा रही है और यह केवल 'गदर 2' के कारण है। उन्होंने साझा किया कि स्वतंत्रता दिवस पर फिल्म का कलेक्शन चरम पर था : स्वतंत्रता दिवस पर 'गदर 2' का कारोबार बहुत बड़ा था, लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि दूसरे शनिवार को फिल्म में केवल 30 प्रतिशत की मामूली गिरावट देखी गई।

विचार पेज का शेष

भारतीय संस्कृति का परिदर्शक ऋग्वेद उपाकर्म

संसार में सबसे अधिक साहित्य संस्कृत भाषा के हैं। सबसे अधिक शब्दों का भंडार संस्कृत भाषा का है। परमेश्वर की वाणी वेद भी संस्कृत भाषा में ही है। बालक के पुष्ट होने और सम्पूर्ण विकास के लिए मातृ दुग्ध का स्तनपान अत्यावश्यक होने की भांति ही संस्कृत के बिना भारत, भारतीय व भारतीयता भी अपुष्ट व अधूरी है। इसीलिए वेद स्वाध्याय के इस महान पर्व पर संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए भारतीय मनीषियों के द्वारा श्रावण पूर्णिमा के दिन को विश्व संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। संस्कृत भाषा कठिन नहीं, अपितु अत्यंत सरल, मधुर, कर्णप्रिय बोलने में अति रुचिकर है। अत्यंत प्राचीन काल की बात छोड़ भी दी जाए, तो भी इस देश में महाभारत काल के पश्चात आदि शंकराचार्य के काल तक तक सभी भारतीय आपस में संस्कृत में ही वार्तालाप किया करते थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अपने कार्य क्षेत्र में उतरने पर उनके व्याख्यान की भाषा भी संस्कृत हुआ करती थी। अर्थात भारत के लोग स्वामी दयानन्द के काल में भी अच्छी तरह से संस्कृत समझ लिया करते थे। लेकिन बाद में भारतीयों की वैदिक विद्या के कारण होती उन्नति से जलने वाले विदेशियों, विधर्मियों के शासनकाल में भारतीय संस्कृति के प्राण संस्कृत भाषा के पठन- पाठन, अध्यापन और प्रचार- प्रसार में भांति- भांति के अवरोध उत्पन्न किए गए। इनके पठन- पाठन के केंद्र गुरुकुल नष्ट कर शासकीय संरक्षण में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति को समाप्त कर दिया गया और नए ढंग के मदरसे, मकतब, कॉनवेंट स्कूल, कॉलेज स्थापित कर विदेशी शिक्षा का प्रचलन किया गया। जिसके कारण अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषा का देश में पदार्पण हुआ, और संस्कृत को भारतीय मानस के हृदय से मिटाने का, भुलाने का भरसक प्रयत्न किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्वाधीन कही जाने वाली इस भारत में संस्कृत के प्राण बहुरने की उम्मीद थी, परंतु भारत विभाजन के बाद बने राष्ट्र के प्रभुओं ने भारतीय संस्कृति की प्राण वेदवाणी, देववाणी संस्कृत भाषा को मृतभाषा कहकर इसके प्रचार- प्रसार तो क्या इसके विधिवत शिक्षा को भी शासन- प्रसासन की मुख्यधारा से वंचित करने का हरसंभव प्रयास ही किया है। जिसके कारण संस्कृत भारतीयों के मानस पटल से दूर होती गई है। केंद्र की वर्तमान सरकार के द्वारा संस्कृत के पुनर्स्थापन के लिए संस्कृत के विश्वविद्यालय आदि खोलने की दिशा में अपनी उत्सुकता दिखलाये जाने जाने से कुछ उम्मीद बंधती है। इस प्रकार निःसंदेह ही श्रावणी उपाकर्म नामक यह पर्व भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक पथ का परिदर्शक है।

स्वतंत्रता-संग्राम और नागरिक

जर्मनी के आर्थिक मामलों के मंत्री रॉबर्ट हाबेक ने साप्ताहिक अखबार डी त्साइट से कहा, निर्यात ने हमारे लिए संपत्ति अर्जित करने का काम किया। लेकिन वैश्विक अर्थव्यवस्था की कमजोरी का अन्य देशों के मुकाबले जर्मनी में ज्यादा तगड़ा असर पड़ता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, आईएमएफ के मुताबिक 2023 में दुनिया की एक ही बड़ी अर्थव्यवस्था सिकुड़ेगी और वो है जर्मनी।25 अगस्त को अप्रैल से जून के तिमाही आंकड़े सामने आए। इन आंकड़ों का निचोड़ कहता है कि जर्मनी की विकास दर शून्य फीसदी है।

इन सारे तथ्यों से जर्मनी की गठबंधन सरकार वाकिफ है। लेकिन सरकार, परस्पर विरोधी किस्म के मूल्यों वाली तीन पार्टियों से मिलकर बनी है। अहम मुद्दों पर इतनी बहस हो रही है कि एक कदम आगे और फिर एक कदम पीछे जाने जैसे नजारे आम हो चुके हैं। मसलन पर्यावरण मुद्दों की पैरोकार, ग्रीन पार्टी के नेता रॉबर्ट हाबेक, आर्थिक मामलों के मंत्री हैं। वहीं उदारवादी तरीके से कारोबारी हितों को तरजीह देने वाली एफडीपी पार्टी के नेता क्रिस्टियान लिंडनर वित्त मंत्री हैं।

हाबेक चाहते हैं कि बहुत ज्यादा ऊर्जा खर्च करने वाले जर्मन उद्योगों के लिए 2030 तक बिजली के दाम, तय सीमा के भीतर रखें जाएं। उन्हें लगता है कि जर्मनी का केमिकल उद्योग इसी तरह वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकेगा। वहीं लिंडनर सीधे तौर पर सब्सिडी देने के खिलाफ हैं। चांसलर ओलाफ शॉल्ट्स भी लिंडनर जैसी राय रखते हैं। लेकिन उनकी पार्टी, एसपीडी के कई नेता हाबेक के प्लान का समर्थन करते हैं।

बहुरंग

अरमान मलिक ने गर्लफ्रेंड आशना श्रॉफ से की सगाई

सिंगर-सॉन्गराइटर अरमान मलिक ने अब अपनी फैशन इन्फ्लुएंसर गर्लफ्रेंड आशना श्रॉफ से सगाई की। उन्होंने सोमवार को इसकी घोषणा की। कपल ने इस मोमेंट्स को अपने-अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किया। दोनों ने इस खास पल की कई तस्वीरें शेयर की। पहली इमेज में, सिंगर अपने घुटनों पर बैठकर आशना को अंगूठी पहनाते दिखाई दे रहे हैं। दूसरी तस्वीर में दोनों उस पल को संजोते और हंसते नजर आ रहे हैं तीसरी तस्वीर में अरमान, आशना के माथे पर किस कर रहे हैं। अरमान और आशना कई सालों से डेटिंग कर रहे थे। अब उन्होंने इसे ऑफिशियल कर दिया है। हालांकि, उन्होंने इस बात का खुलासा नहीं किया है कि वे कब शादी करेंगे। अरमान को हिंदी, तेलुगु, अंग्रेजी, बंगाली, कन्नड़, मराठी, तमिल, गुजराती, पंजाबी, उर्दू और मलयालम सहित कई भाषाओं में उनकी सिंगिंग के लिए जाना जाता है 2006 में, उन्होंने 'सारे गा मा पा लिटिल चैंप्स' में हिस्सा लिया लेकिन आठवें स्थान पर रहने के बाद बाहर हो गए। वह संगीतकार अमाल मलिक के भाई हैं। उन्हें 'बुद्धा बोम्मा', 'बुद्धू सा मन', 'पहला प्यार', 'कंट्रोल', सब तेरा', 'बोल दो ना जरा' और 'स्लीपलेस नाइट्स' जैसे कई अन्य गानों के लिए जाना जाता है।

दिलचस्प

थाना सिविल लाइन पुलिस नें अपहृत बालक को 4 घंटे के अंदर किया दस्तयाब

पुष्पांजलि टुडे, राजेश कुमार तिवारी

पुलिस अधीक्षक महोदय सतना श्री आशुतोष गुप्ता के निर्देशन में ,श्रीमान नगर पुलिस अधीक्षक महोदय श्री महेन्द्र सिंह के मार्गदर्शन मे थाना प्रभारी निरी. योगेन्द्र सिंह परिहार के नेतृत्व में साइबर सेल की सहायता से की गई कार्यवाही। विवरण दिनांक 28.08.2023 को पतेरी निवासी फरियादी द्वारा थाना आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि इसका अवयस्क बालक दिनांक 28.08.2023 को सुबह करीब 11.00 बजे घर से मैगी लेने गया था जो शाम तक घर वापस नही आया है जिसकी सूचना थाना मे रात्रि 12 बजे प्राप्त होने पर तत्काल थाना प्रभारी सिविल लाइन के नेतृत्व मे टीम गठित कर सायबर सेल के माध्यम से अपहृत बालक को संभावित अलग-अलग स्थान में रातभर परिजन के साथ पताशाजी की गई नाबालिक बालक को सुबह करीबन 5:00 बजे बस स्टैंड के पास दस्तयाब कर सकुशल परिजनो के सुपुर्द किया गया। सराहनीय कार्य ङ्क थाना प्रभारी सिविल लाइन योगेन्द्र सिंह परिहार, उनि0 अजीत सिंह प्रभारी सायबर सेल, सउनि0 अमर सिंह, सउनि0 रोहिणी प्रसाद वर्मा, प्रआर 533 प्रवीण तिवारी, आर. 77 प्रशात परौहा, आर. 536 शिवम शुक्ला।

हिमेश ने कंटेस्टेंट्स को दिया गाना रिकॉर्ड करने का मौका

सिंगर और 'सा रे गा मा पा' 2023 के जज हिमेश रेशमिया ने ऑडिशन राउंड में दो कंटेस्टेंट्स को गाना रिकॉर्ड करने का मौका दिया। सिंगिंग रियलिटी शो में हिमेश रेशमिया, नीति मोहन, अनु मलिक जज और आदित्य नारायण होस्ट हैं। सभी अपने सिंगिंग टैलेंट से ऑडिशन राउंड में जजों को इंप्रेस करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, जज हिमेश ने कंटेस्टेंट्स आरोह और वांगय को ए गाना रिकॉर्ड करने का मौका देकर एक कदम आगे बढ़ाया है। क्रमशः 'ना जा कहीं अब ना जा' और 'जीये क्यों' पर उनकी परफॉर्मेंस ने न केवल दर्शकों का बल्कि हिमेश का भी दिल जीत लिया और उन्हें मौका देने के लिए भी प्रेरित किया। आरोह के परफॉर्मेंस की सराहना करते हुए, हिमेश ने कहा, आपने अपनी आवाज से स्टेज पर धूम मचा दी है। चाहे आज तुम्हारा सलेक्शन हो या न हो, मैं तुम्हें एक गाना रिकॉर्ड करने का मौका दूंगा। वहीं वांगय की कहानी सुनने के तुरंत बाद, हिमेश ने कहा, आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है, हम निश्चित रूप से गाने रिकॉर्ड करेंगे।

शो के सबसे पसंदीदा जजों में से एक, हिमेश 'सा रे गा मा पा' के सबसे लंबे समय तक जज रहे हैं। इंडस्ट्री में 'तेरा सुरूर', 'आप की कशिश' और 'मुझको याद सताए तेरी' जैसे गाने देने के बाद, वह एक बार फिर देश भर से नई प्रतिभाओं को उजागर करने और उन्हें उभरने के लिए प्रशिक्षित करने में मदद करने के लिए तैयार हैं। 'सा रे गा मा पा' का नया सीजन जी टीवी पर प्रसारित हो रहा है।

महा जनसंपर्क का आधार होगी जनआशीर्वाद यात्रा : रणवीर रावत

ग्वालियर। मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी राज्य व केंद्र सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के मकसद से एक साथ पांच स्थानों से जनआशीर्वाद निकालेगी। पांचवी यात्रा ग्वालियर-चंबल संभाग के बड़ौदा-श्योपुर से 6 सितम्बर को प्रारंभ होगी, जिसका शुभारंभ भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा जी करेंगे। यह यात्रा 11 जिलों, 5 लोकसभा क्षेत्र 43 विधानसभाओं से होकर गुजरेगी। जिसमें ग्वालियर चंबल संभाग के अलावा विदिशा, रायसेन आदि जिले शामिल है। यह यात्रा 2034 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। इस यात्रा का 262 स्थानों पर स्वागत होगा, 55 रथ सभाएं, 16 रोड शो तथा 48 आमसभाएं आयोजित होंगी। यात्रा में सभाओं को संबोधित करने के लिए प्रदेश के प्रमुख नेताओं के अलावा केंद्र सरकार के मंत्रीगण, पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारी शामिल रहेंगे। सभी पांचों यात्राओं का समापन 25 सितंबर को पं दीनदयाल उपाध्याय जी जन्मजयंती पर जम्हूरी मैदान भोपाल में होगा। इस कार्यकर्ता महाकुंभ को देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संबोधित करेंगे। उक्त बात भाजपा के प्रदेश महामंत्री एवं जन आशीर्वाद यात्रा के प्रभारी रणवीर रावत ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कही।

पटवारियों ने कलम बंद हड़ताल के चलते हटीले हनुमान जी मंदिर पर लगाई अर्जी

दैनिक पुष्पांजली टुडे

गोहद। गोहद अनुभाग के अंतर्गत सभी तहसीलों के पटवारियों ने मध्य प्रदेश पटवारी संघ के आह्वान पर कलम बंद हड़ताल करते हुए सोमवार को अपनी बस्ते तहसीलदार को सौंपे वही मंगलवार को श्री हटीले हनुमान जी मंदिर पर हनुमान जी को अर्जी पत्र लिखकर मन्नत मांगी जिसमें पटवारियों ने पत्र में लिखा कि सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में लगभग 19000 पटवादी पदस्थ, सेवारत होकर अपने संगठन म.प्र. पटवारी संघ भोपाल के बेनर तले आपसे निवेदन है कि म.प्र. में पटवारियों को वर्ष 1998 में निर्धारित किए गये वेतनमान के अनुसार ही वर्तमान वर्ष 2023 में वेतन दिया जा रहा है। विगत 25 वर्षों में प्रदेश के पटवारियों के वेतनमान में कोई नहीं वृद्धि नहीं की गई है। माननीय महोदय द्वारा कानून में संशोधन कर म.प्र. के पटवारियों को उच्च पद का अतिरिक्त कार्य सीमांकन का प्रभार तो दिया गया परंतु उस उच्च पद का वेतन नहीं दिया जा रहा है। राजस्व निरीक्षक के समान ग्रेड पे 2800 दिया जाए। एवं विभिन्न मांगों को मनवाने के लिये सरकार को सद्बुद्धि दें तथा पटवारियों की मांगों को पूरा करवाने की कृपा की जाए।

भिंड स्टेशन पर टावर वैगन साइडिंग की शुरुआत

मंडल के भिंड स्टेशन पर इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग में मेजर परिवर्तन का कार्य संपन्न

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । उत्तर मध्य रेलवे, झाँसी मंडल के भिंड स्टेशन पर टावर वैगन साइडिंग की शुरुआत हुई। कमीशनिंग हेतु इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग में मेजर अल्टरेशन का बड़ा कार्य सफलतापूर्वक बिना किसी ट्रेन के विलंबन के साथ संपन्न कर लिया गया है। उक्त संस्थापन कार्य के पूर्ण होने से टावर वैगन के सञ्चालन में सुगमता मिलेगी जिससे ओएचई का रख रखाव और बेहतरी से हो सकेगा। उक्त कार्य मंडल रेल प्रबंधक दीपक कुमार सिन्हा के कुशल मार्ग-दर्शन और वरिष्ठ मंडल सिग्नल और दूरसंचार इंजिनियर अमित गोयल, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक (समन्वय) अखिल शुक्ल,वरिष्ठ मंडल परि.प्रबंधक (जी-जी) जे संजय कुमार, मंडल परि.प्रबंधक(को.) डी के जैन, मंडल परि.प्रबंधक (गुड्स) राजपूत के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

उपमुख्यमंत्री का बयान कांग्रेस में मचे घमासान का परिचायक : भाजपा

भाजपा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष साय ने कहा = सिंहदेव की चेतावनी मुख्यमंत्री बघेल से उनके रिश्तों की खटास को जाहिर कर रही, सरगुजा में कांग्रेस की सीटें घटने की बात कहकर सिंहदेव ने कांग्रेस की तयशुदा हार पर मुहर लगा दी = साय रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष विष्णु देव साय ने उपमुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव के उस बयान पर कटाक्ष किया है, जिसमें उपमुख्यमंत्री सिंहदेव ने सरगुजा संभाग के अपने दौरे में पार्टी के भीतर अपने ही विरोधियों पर निशाना साधते हुए कहा है कि राजा साहब और रानी माता के खिलाफ किसी भी तरह की टिप्पणी और उन पर जान को खतरे के लगाए गए आरोप पर कोई समझौता नहीं हो सकता। श्री साय ने सिंहदेव के उस बयान को भी कांग्रेस में मचे घमासान का परिचायक बताया है कि जिसमें स्थिति अनुकूल नहीं होने पर उत्तर छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सीटें आधी भी हो सकने की बात उपमुख्यमंत्री ने कही है। भाजपा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री साय ने कहा कि कांग्रेस एकजुटता का चाहे जितना राग अलाप रही हो, लेकिन धरातल पर अब भी कांग्रेस पस्त है और कांग्रेस के नेता अपनी हार तयशुदा मानकर चल रहे हैं। कांग्रेस की अंतर्कलह का आलम यह है कि उपमुख्यमंत्री अब अपने राजनीतिक विरोधियों पर खुलकर हमला बोल रहे हैं और इसके बाद भी यदि विरोधियों को तवज्जो दी गई तो सिंहदेव साफ कर चुके हैं कि आगे क्या होगा, यह जनता जाने और पार्टी जाने, पर अब वे कोई समझौता नहीं करेंगे। श्री साय ने कहा कि ब? बेमन से उपमुख्यमंत्री पद पर बैठे सिंहदेव की यह चेतावनी मुख्यमंत्री बघेल और उपमुख्यमंत्री सिंहदेव के रिश्तों की खटास को जाहिर कर रही है। शायद यही वजह है कि कांग्रेस के पौने पांच साल के कार्यकाल में सरगुजा संभाग के कुछ विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने भी सीधे विधायकों के खिलाफ ही मोर्चा खोल दिया है। सामरी एवं बैकुंठपुर विधानसभाओं में पूरा संगठन ही विधायकों के खिलाफ खड़ा है।

भाजपा ने सवाल दागा : भूपेश सरकार आरक्षण के नाम पर राजनीति क्यों कर रही है

प्रदेश प्रवक्ता गुप्ता ने कहा- आरक्षण के मसले को उलझाए रखने की नीयत से प्रदेश सरकार आरक्षण के मसौदे के साथ क्वांटीफायबल डाटा प्रस्तुत नहीं कर रही

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता केदारनाथ गुप्ता ने आरक्षण के मुद्दे पर प्रदेश सरकार पर निशाना साधते हुए कहा है कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने आरक्षण को लेकर हर वर्ग को दुविधा में डाल रखा है। श्री गुप्ता ने कहा कि भाजपा संविधान की भावनाओं के अनुरूप हर वर्ग को पर्याप्त आरक्षण की हिमायती है और इसीलिए भाजपा ने प्रदेश सरकार द्वारा विधानसभा में आरक्षण के रखे गए मसौदे का समर्थन किया था। लेकिन, प्रदेश की भूपेश सरकार आरक्षण के नाम पर राजनीति क्यों कर रही है, यह समझ से परे है। आरक्षण के मसौदे के साथ आवश्यक होने के बावजूद क्रांटीफायबल डाटा प्रस्तुत नहीं करके प्रदेश सरकार राज्यपाल के समक्ष संवैधानिक दिक्कत खड़ी करके अब बिलावजह राज्यपाल को अपनी गंदी राजनीति में घसीट रही है। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता श्री गुप्ता ने मंगलवार को एकात्म परिसर स्थित भाजपा कार्यालय में आहूत प्रेस ब्रीफ में पत्रकारों से कहा कि कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के द्वारा आरक्षण पर आपत्ति कराई गई, सरकार ने अपने पक्ष में बड़े वकील या महाधिवक्ता को खड़ा नहीं किया और हाईकोर्ट में सरकार आरक्षण का केस जान-बूझकर हार गई। श्री गुप्ता ने कहा कि प्रदेश सरकार लगातार यह झूठ फैला रही है कि भाजपा प्रदेश के राज्यपाल पर आरक्षण के मसौदे को रोके रखने का दबाव डाल रही है। संविधान के अनुच्छेद 341 व 342 में स्पष्ट उल्लेख है कि आरक्षण का मूल आधार क्रांटीफायबल डाटा होगा और राज्यपाल प्रदेश सरकार को बार-बार क्रांटीफायबल डाटा प्रस्तुत करने कह रहे हैं परंतु प्रदेश सरकार ने आरक्षण के मसले को उलझाए रखने की

नीयत से आरक्षण के मसौदे के साथ यह डाटा न तो राज्यपाल को उपलब्ध कराया, न ही विधानसभा के पटल पर रखा और न ही विधानसभा में इस पर को चर्चा की। श्री गुप्ता ने कहा कि कानूनन जब क्रांटीफायबल डाटा आवश्यक है तो भाजपा के इस सवाल का जवाब मुख्यमंत्री बघेल दें कि आरक्षण को राजनीति में क्यों उलझा रहे हैं और क्रांटीपायबल डाटा क्यों प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं।

अपर कलेक्टर विकास ने आम जनता के 93 आवेदन पत्रों में की सुनवाई

दैनिक पुष्पांजली टुडे
(ब्यूरो चीफ रीवा)

रीवा। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जन सुनवाई में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं अपर कलेक्टर विकास डॉ सौरभ सोनवणे ने आमजनता के 93 आवेदन पत्रों में सुनवाई की। अपर कलेक्टर ने अधिकारियों को 7 दिनों की समय-सीमा में आवेदन पत्रों के निराकरण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी तत्परता के साथ आवेदन पत्रों का निराकरण कर ऑनलाइन प्रतिवेदन दर्ज कराएं। जन सुनवाई में सीमांकन, बंटवारा, जमीन से अवैध कब्जा हटाने, हैण्डपंप सुधार, उपचार सहायता, पेंशन प्रकरण तथा अनुकंपा नियुक्ति सहित विभिन्न आवेदन पत्रों में सुनवाई की गई। अपर कलेक्टर ने स्कूटी वितरण योजना से संबंधित चार आवेदन पत्रों का तत्काल निराकरण करने के निर्देश जिला शिक्षा अधिकारी को दिए। जन सुनवाई में अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह ने भी आमजनता के आवेदन पत्रों में सुनवाई की। जन सुनवाई में लीला सोनी निवासी संसारपुर ने उनकी जमीन पर किए जा रहे अवैध निर्माण को रोकने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने एसडीएम सिरमौर को तत्काल मौके पर जाकर कार्यवाही के निर्देश दिए। बृजवासी यादव तथा ग्राम करहिया के कई निवासियों ने आम रास्ते में अवैध निर्माण करने तथा रास्ते को अवरूद्ध कराने के संबंध में शिकायत की। अपर कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को आवेदन में तत्काल कार्यवाही करके अवैध कब्जा हटाने के निर्देश दिए। राजबहोर केवट निवासी ग्राम महसांव ने बिजली विभाग द्वारा खराब ट्रांसफार्मर बदलने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने अधीक्षण यंत्री विद्युत मंडल को इस संबंध में तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए। जन सुनवाई में भैयालाल शुक्ला निवासी ग्राम दुबहाई ने पुत्र, नाती तथा पुत्रवधू द्वारा प्रताड़ित करने एवं घर से निकालने की शिकायत की। अपर कलेक्टर ने एसडीएम मनगवां को भरण-पोषण अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही के निर्देश दिए। शैलेन्द्र द्विवेदी निवासी जोन्हा ने जमीन के सीमांकन के संबंध में तहसीलदार के आदेश

का पालन कराने के संबंध में आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने एसडीएम त्योंथर को प्रकरण में कार्यवाही के निर्देश दिए। सेवानिवृत्त शिक्षक चन्द्रिका प्रसाद तिवारी निवासी चन्द्रपुर ने पेंशन के निर्धारण तथा स्वत्वों के भुगतान के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने जिला शिक्षा अधिकारी को सात दिवस में प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। सत्यप्रकाश त्रिपाठी निवासी नेवरिया ने समग्र आईडी अलग कराने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय को तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए। सुरेश मिश्रा निवासी ग्राम जोन्ही ने तीर्थदर्शन योजना का लाभ देने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने प्रभारी अधिकारी धर्मस्व को आवेदन पत्र में समुचित कार्यवाही के निर्देश दिए।

संजय नगर विद्यालय में मनाया गया रक्षाबंधन त्योहार

केबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने बच्चों को बांटे उपहार, बहनों ने श्री शुक्ल को बांधी राखी

दैनिक पुष्पांजली टुडे
(ब्यूरो चीफ रीवा)

रीवा। शासकीय विद्यालय, संजय नगर, में अध्ययनरत छात्रों के बीच रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाया गया। इस अवसर पर लगभग 400 छात्रों को राखी सहित उपहार प्रदान किए गये। केबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने बच्चों को उपहार भेंट किये तथा सुदिशा फाउंडेशन की बहनों ने श्री शुक्ल को राखी बांधी। इस अवसर पर केबिनेट मंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रक्षाबंधन के त्योहार के अवसर पर सुदिशा फाउंडेशन का कार्य सराहनीय है। इनके द्वारा गरीब बच्चों को उपहार दिये जा रहे हैं इससे जुड़े सदस्य बधाई के पात्र हैं। श्री शुक्ल ने कहा कि रक्षाबंधन का त्योहार भाईचारा मजबूत करने का संदेश देता है। मुख्यमंत्री जी ने लाडली बहना योजना लागू की है जो महिलाओं को सशक्त बना रही है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी बहनों से राखी भी बंधवा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिन बहनों ने आज मुझे राखी बांधी है मैं हमेशा उनके साथ खड़ा रहूंगा। ऐसे आयोजनों से समाज की ताकत बड़ती है। उन्होंने विद्यालय का उन्नयन करने की भी बात कही। कार्यक्रम में विभु सूरी, परमजीत सिंह डंग, संजीव गुप्ता, प्रकाश गुप्ता, बंसीलाल साहू, अक्षय गुप्ता, शिवकुमार साहू, राजकुमार

जायसवाल, प्रकाश सोनी चिंटू, विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती शैलजा सिंह, रंजना मिश्रा, पंकज वाजपेयी, शिवेंद्र शर्मा, नगर के प्रबुद्ध जन अम्बिका दुबे, प्रमोद तिवारी, मनोज सिंह गहरवार, अरुण तोमर सहित सुदिशा फाउंडेशन के सदस्य।

भ्रमण के दौरान बालिकाओं को दी प्लास्टिक से होने वाले नुकसान की जानकारी

जवाली पाली – इंसान जब जन्मदात्री मां के आंचल को छोड़कर चलना सीखता है तब से लेकर अंतिम सांस तक उसके जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति ÷धरती मां÷ के आंचल से ही पूर्ण होती है। इंसान होने के नाते हम मातृभूमि के प्रतिक्षण ऋणी है,लेकिन इतना सबकुछ पाने के बाद भी आज हम मातृभूमि के आंचल को प्लास्टिक से अंधाधुन प्रदूषित कर रहे है। धरती मां को प्लास्टिक से पाटने में कोई कसर नहीं छोड़ते ये उदगार आज श्री आईजी बालिका विद्यापीठ जवाली के ÷श्री आईजी गुरुकुल छात्रावास÷ की बालिकाओं के श्री अंजनेश्वर महादेव सालारिया भ्रमण के दौरान प्रधानाचार्य श्री जसाराम चौधरी ने मंदिर परिसर के बाहर बिखरे प्लास्टिक को देखकर कहे और उसी दौरान %आईजी गुरुकुल% छात्रावास जवाली की छात्राओं ने बिखरे हुए प्लास्टिक को वहां मौजूद गौमाता खा रही थी उसे देखकर तुरंत ही सभी छात्राओं ने प्लास्टिक को इकट्ठा किया और उसे तुरंत ही जलाकर फैलने से रोक दिया। इसी के साथ वहां उपस्थित लॉरी, खुमचे वालों को भी डस्टबिन रखकर प्लास्टिक नहीं बिखेरने व नहीं फैलाने की शपथ दिलाकर नैतिक रूप से पाबंद व प्रोत्साहित किया। वहां उपस्थित भक्तों व आगंतुक श्रद्धालुओं ने बालिकाओं के इस सेवा कार्य की सराहना की और स्वयं भी प्लास्टिक मुक्त मंदिर परिसर के लिए जुट गए। वॉर्डन श्रीमती संतोष शर्मा,अध्यापक राकेश सीरवी,अरुणा व्यास ने भी बालिकाओं को कहां कि ÷पवित्र स्थानों की पवित्रता को बनाए रखना ही सच्ची भक्ति है। इस बात को छात्रावास की बालिकाओं ने सेवा करके सार्थक सिद्ध किया है।

किसान ने गौ माता की बचाई जान आवारा कपत्तों से बछड़े को छुड़ाया

बछड़े को पहुंचाया एंबुलेंस से गौशाला, पुष्पांजलि टुडे संवाददाता पाली राजस्थान। नरेश कुमार सिरवी, जवाली पाली- गौ माता की जख्मी बछड़ी को सुरभी गौ सेवा एंबुलेंस से पहुंचाया गौशाला रानी उपखंड के जवाली के पास सालरिया ग्राम के तालाब के अंदर छोटी बछड़ी चर रही थी तो आवारा कुत्तों ने नोच नोच कर जख्मी कर दिया तालाब के पास ही उगनिया बेरा के किसान ने कुत्तों से छुड़ा कर जानकारी नरपत घांची को दी मौके पर जाकर प्राथमिक उपचार करवाया गया व बछड़ी के स्वास्थय में असर नहीं दिखाई देने पर सुरभी गौ सेवा संस्थान एंबुलेंस को जानकारी दी गई। एंबुलेंस मौके पर पहुंची उपचार पर बछड़ी को पिंजरापोल गौशाला भिजवाया गया। सेवा में एंबुलेंस सारथी तुलसीदास वैष्णव, गणेश कुमावत, कूका राम चौधरी, कानसा जोशी, राहुल बमनिया, भाविक चौधरी व राह चलते राहगीरों का भी सराहनीय योगदान रहा।

विश्वविद्यालय के नवागत थाना प्रभारी ने किया पदभार ग्रहण

दैनिक पुष्पांजली टुडे
(ब्यूरो चीफ रीवा)

रीवा। आगामी होने वाले चुनाव के मद्देनजर जहां कर्मचारियों व अधिकारियों पुलिस मुख्यालय से स्थानांतरण आदेश जारी हो रहे हैं वहीं रीवा जिले के पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने भी बड़ी सर्जरी करते हुए दर्जनभर थाना प्रभारियों में बदलाव किया है। उप निरीक्षकों के भरोसे प्रभार में चल रहे थानों में निरीक्षकों की पदस्थापना की है। विश्वविद्यालय थाने के नवागत थाना प्रभारी विजय सिंह बघेल ने अपना पदभार ग्रहण कर लिया है। पदभार ग्रहण करते हुए श्री सिंह ने कानून व्यवस्था कायम करने हेतु जनता से पुलिस का सहयोग करने की अपील की है।

ग्राम पंचायत सहसराम में फर्जी का रपटे कोई खेतो में बन रहा है रपटा

पुष्पांजली टुडे

मध्यप्रदेश श्योपुर जिले के ग्राम पंचायत सहसराम में फर्जी रपटे बनाए जा रहे हैं और वह पास भी किया जा रहे हैं खेतों में जहां कोई भी यूज़ लेबल नहीं है फिर भी सब इंजीनियर साहब ने पास कर दिया है ग्राम पंचायत सहसराम में पूरे काम फर्जी किए जा रहे है फिर भी वहां के पैसे निकाल है खेतों में फर्जी रपटे बनाए जा रहे हैं पूरा पैसा निकाल लिए पहले ही आगे कोई रास्ता नही है फिर सब इंजीनियर साहब ने पास कर दिया ग्राम पंचायत सहसराम के सचिव महेश धाकड़ जी ने उनके साथ दिया है काम कर रहे है।

चाचा की चिलम सौ वर्ष बाद आज भी जल रही है: सुरेश सम्राट

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। मध्यभारतीय हिंदी साहित्य सभा द्वारा विगत शनिवार एवं रविवार को दो महत्वपूर्ण साहित्यिक कार्यक्रम पाठक मंच एवं बाल गोष्ठी का आयोजन किया गया पाठक मंच में ग्वालियर के जाने-माने वरिष्ठ साहित्यकार शैवाल सत्यार्थी जी द्वारा संपादित पुस्तक %चाचा की चिलम% की समीक्षा प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में समीक्षक के रूप में युवा रचनाकार शिवम सिंह सिसोदिया एवं वरिष्ठ रचनाकार रमेश कटारिया पारस, मुख्य अतिथि के रूप में शैवाल सत्यार्थी जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार डॉ.सुरेश सम्राट जी ने की। स्वर्गीय शांतिस्वरूप चाचा जी की समसामयिक मुद्दों पर केंद्रित व्यंग्य कविताओं के संकलन पर विषयवस्तु की दृष्टि से अपनी बात रखते हुये समीक्षक श्री रमेश कटारिया पारस ने कहा कि-चाचा की चिलम में संकलित कविताओं कासामाजिक और मानवीय स्तर पर महत्व सदैव ही रहेगा। इसी क्रम में युवा रचनाकार शिवम सिंह सिसोदिया ने पुस्तक के विविध पक्षों पर अपने विचार रखते हुये कहा-चाचा की चिलम में संकलित कविताओं में अध्यात्म,दर्शन और जीवन के अन्य पहलुओं पर भरपूर प्रकाश डाला गया है चाचा की चिलम का एक बार सुट्टा लगाकर निश्चित ही साहित्यिक रस का पूरा आनन्द लिया जा सकता है। उन्होंने पुस्तक के भाषा शौष्ठव एवं शिल्प पर भी अपनी बात रखी मुख्य अतिथि शैवाल जी ने पुस्तक संकलन से जुड़े अपने अनुभवों के साथ ही चाचा जी से जुड़े

अपने संस्मरण को साझा करते हुए कहा-चाचा ने सभी विषयों पर अपनी लेखनी चलाई और भाव के निर्वाह की दृष्टि से उत्कृष्ट साहित्य रचना की।शैवाल जी ने चाचा की रचना क्या करे चाचा बेचारा% का वाचन करते हुये चाचा के स्वाभिमानी व्यक्तित्व को पाठकों के समझ जीवंत किया। अध्यक्षता की आसंदी से डॉ.सुरेश सम्राट जी ने ग्वालियर की साहित्य परम्परा को समृद्ध बनाने में साहित्य सभा की भूमिका एवं चाचा शांतिस्वरूप जी के सृजन पर प्रकाश डालते हुये कहा-चाचा जी एक ऐसा स्कूल थे जहाँ नगर के सभी साहित्यकारों का मार्गदर्शन प्राप्त होता था। चाचाजी की कविता जब चला संन्यास लेने तब सगाई आई से जुड़े अपने व्यक्तिगत अनुभव को साझा करते हुये बताया कि सृजनात्मक साधना समाज जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है और उस पर अपने जीवन के कुछ संस्मरण प्रस्तुत किये। पुस्तक पर अपने विचार रखते हुये कहा-चाचा की रचनाएं समीक्षा और आलोचना से बहुत ऊपर उठ चुकी हैं। उनकी रचनाएं दर्शन तथा जीवन मूल्यों से जुड़ी हुई रोचक शैली में प्रस्तुत ऐतिहासिक दस्तावेज है। इसी क्रम में सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकिशोर वाजपेयी जी एवं वरिष्ठ साहित्यकार पुष्पा सिसोदिया जी ने शान्तिस्वरूप चाचा जी की रोचक कार्यशैली के प्रसंगों को स्मरण किया। कार्यक्रम का संचालन युवा रचनाधर्मी सुश्री पलक सिकरवार ने,कार्यक्रम की प्रस्तावना संघ की युवा विचारक एवं समीक्षक सुश्री जाह्नवी नाईक ने, सरस्वती वंदना युवा रचनाकार व्याप्ति उमड़ेकर ने एवं आभार सुश्री कुन्दा जोगलेकर जी ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में नगर के वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री विजयकृष्ण योगी जी,बी.एल.शर्मा, रामचन्द्र किल्लेदार, अशोक शर्मा नादान, प्रथम बघेल,दीपक कोल, राकेश पांडे, उपेन्द्र कस्तूरे सहित सभा के सभासद एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। रविवार को आयोजित बालगोष्ठी में संयोजक डॉ मंदाकिनी शर्मा, श्रीमती संगीत गुप्ता एवं व्याप्ति ने बालकों से चन्द्रयान 3 के विषय मे रोचक बातचीत के साथ उन्हें कहानी, कविता, भाषण एवं अन्य प्रकार से साहित्य सृजन की प्रेरणा दी ।बाल गोष्ठी में गजराराजा विद्यालय के अंकिता गुर्जर, गोरखीविद्यालय के प्रियांशु कुशवाह,किड्ज कॉर्नर के मयंक शाक्य,दीक्षा शाक्य, शा.कन्या.उ.मा.विद्यालय की मुस्कान कुशवाह ने तत्कालीन विषय सम्प्रेषण कौशल के महत्वपूर्ण पक्षों को खेल- खेल में सीखा साथ ही नचिकेता पुस्तक की पाठकीय समीक्षा प्रस्तुत की। इस अवसर पर श्रीमती संगीता गुप्ता,डॉ. मंदाकिनी शर्मा, प्रथम बघेल,दीपक कोल सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478